हँसती दुनिया

₹10/-

वर्ष 42 अंक 2 फरवरी 2015

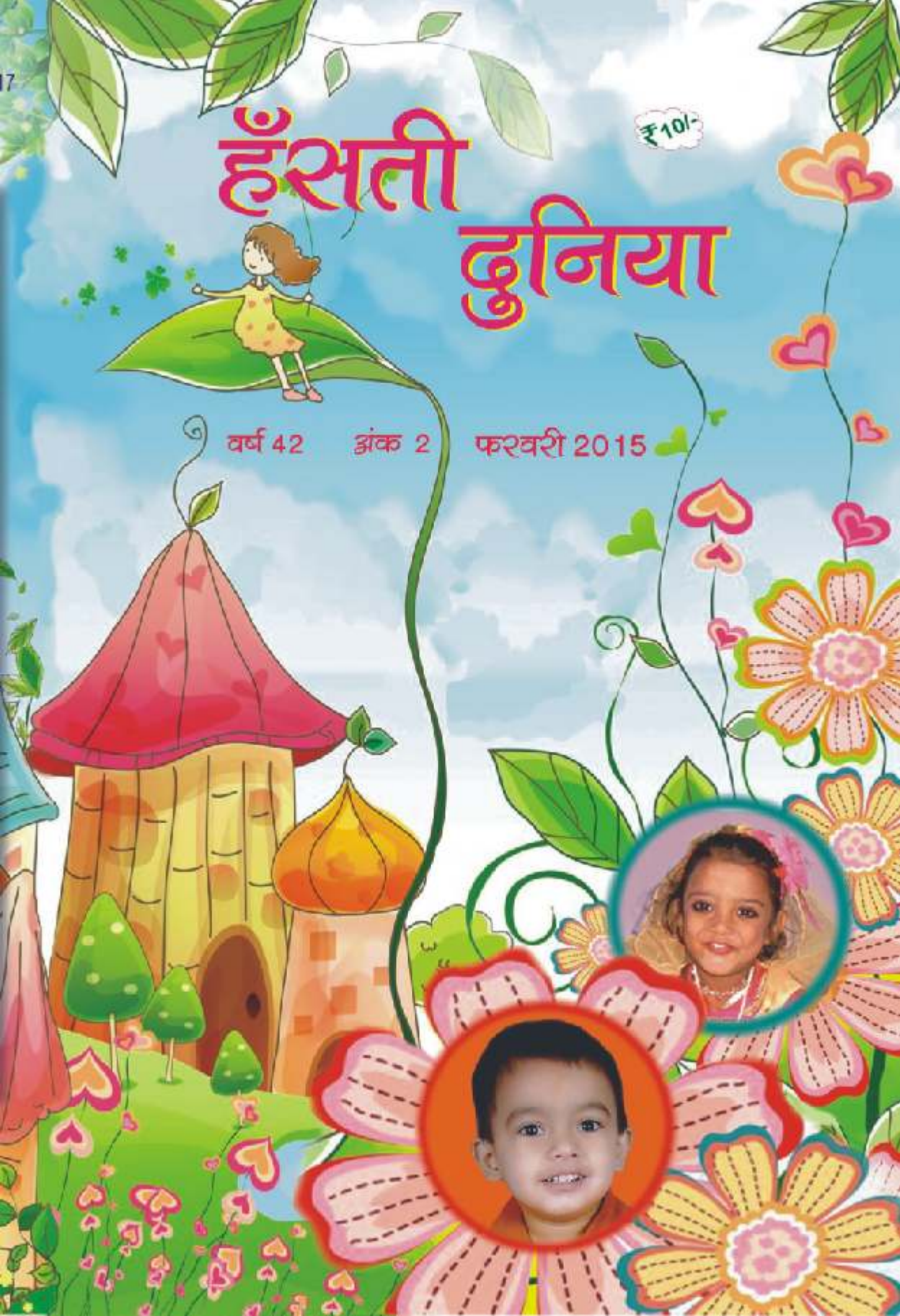

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

हँसती दुनिया

वर्ष 42 अंक 2

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

फरवरी 2015

स्तम्भ

सबसे पहले 4
कभी न भूलो 6
जन्मदिन मुबारक 12
समाचार 17
वर्ग पहेली 19
भैया से पूछो 34
पढ़ो और हँसो 46
रंग भरो परिणाम 48
आपके पत्र मिले 65

चित्रकथा

दादा जी 13
फोटो फीचर 56–58

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

समर्पण से ही मुक्ति — शिखा जोशी 7
चतुर शोफर — ईलू रानी 20
जंब–शंभू दोस्त बने — राजकुमार जैन 'राजन' 21
असलियत — डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट' 27
दगे की सजा — रूपनारायण काबरा 36
चोर की मदद करने वाले सेठजी — कमल जैन 42
मक्खी और पहलवान — नीरज कश्यप 52

कविताएं

भारत देश हमारा — हरजीत निषाद 5
बसंत ऋतु — दीपक कुमार 'दीप' 11
अपने को गुणवान करो — घमण्डीलाल अग्रवाल 25
पेड़ नीम का — महेन्द्र सिंह शेखावत 33
बुद्धिमान कहलाता है — डॉ. रतिराम सिंह 43
दो बाल कविताएं — डॉ. रामनिवास 'मानव' 51
दो बाल कविताएं — राधेलाल 'नवचक्र' 59

विशेष/लेख

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी — विकास अरोड़ा 24
गुरुत्वाकर्षण के आविष्कार — राधा नाचीज 26
पहेलियां — राधा नाचीज 31
मंगल ग्रह के बारे में... — विभा वर्मा 32
पेंगुइन का अनोखा संसार — दीपांशु जैन 39
फोबिया — राकेश खेड़ा एडवोकेट 44
फुर्ती और जिज्ञासु होता है : ऊदबिलाव — दीपांशु जैन 60

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रभारी पत्रिका – सी. एल. गुलाटी

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

एक बार एक अध्यापक अपनी कक्षा में गये और उन्होंने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और कुछ प्रश्न पूछे। प्रश्न कुछ इस प्रकार थे।

– क्या हमें चोरी करनी चाहिए?

– क्या हमें ईर्ष्या करनी चाहिए?

– क्या हमें किसी का अपमान करना चाहिए?

– क्या हमें किसी को धोखा देना चाहिए?

उस बच्चे ने सभी प्रश्नों का उत्तर 'न' में दिया। इसी प्रकार उस अध्यापक ने सभी बच्चों को बारी–बारी से अपने पास बुलाया और यही प्रश्न सभी बच्चों से पूछे। बच्चों के उत्तर से अध्यापक प्रसन्न भी हुए और हैरान भी, क्योंकि सभी बच्चों ने प्रश्नों के उत्तर 'न' में ही दिए।

अध्यापक प्रसन्न इसलिए थे कि आज के बच्चे नैतिक और सामाजिक जीवन के नियमों को कितनी अच्छी तरह से जानते हैं और हैरान इसलिए थे कि इन सभी नियमों और आचरण की जानकारी के बावजूद भी बच्चों की जीवनशैली भिन्न है।

वास्तव में यह हैरानी का भी विषय है क्योंकि जीवन में हम कभी सच बोलते हैं और कभी सच नहीं बोलते हैं। यह आज से नहीं, वर्षों से ऐसा होता आया है। हम झूठ भी बोलते हैं और कई बार उस बोले हुए झूठ को सच करने के लिए अनेकों बार और भी झूठ बोलते हैं।

बच्चे जीवन में वही कुछ अपनाते हैं जिसे वे अपने सामने होते देखते हैं। उनके लिए वही प्रेरणा और आचरण का सिद्धान्त बन जाता है जिसे वे बड़े होने पर चाहकर भी बदल नहीं पाते। इसलिए हम बड़ों का यह कर्तव्य बनता है कि हम बच्चों के सामने वही कार्य करें जिनकी हम इनसे अपेक्षा करते हैं। हम स्वयं बच्चों के सामने झूठ नहीं बोलेंगें तो बच्चे हमेशा सत्य ही बोलेगें। हम बड़े किसी की निन्दा, इर्ष्या नहीं करेगें तो बच्चे भी किसी की निंदा, ईर्ष्या नहीं करेंगे और वे सबका सम्मान करेगें।

एक बात हमेशा स्मरण रहनी चाहिए कि अगर हम बच्चों को मालूम है कि क्या ठीक है और क्या गलत, तो फिर हम बच्चों का यह कर्तव्य बनता है कि केवल उचित कार्य ही करें न कि अनुचित कार्यों का अनुसरण। हमें जिन्दगी में केवल ऐसे ही कार्य करने चाहिएं जिससे हमें समाज में ही नहीं बल्कि स्वयं की नज़रों में भी कभी शर्मिन्दा न होना पड़े।

–विमलेश आहूजा

बाल कविता : हरजीत निषाद

भारत देश हमारा

सारे जग से सुन्दर प्यारा, भारत देश हमारा।
हिमगिरी इसका मुकुट बना, हृदय गंगा की धारा।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, यहाँ प्यार से रहते।
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में, भेद न कोई करते।

सब धर्मों के लोग हैं देते, मानवता का नारा।
सारे जग से सुन्दर प्यारा, भारत देश हमारा।

खान पान पहनावे यहाँ बोलियां लगती प्यारी।
अलग–अलग संस्कृतियां इसकी ज्यों फूलों की क्यारी।

सुन्दर ऋतुएं मनभावन, हर मौसम लगता प्यारा।
सारे जग से सुन्दर प्यारा, भारत देश हमारा।

यहाँ दीवाली क्रिसमस राखी, प्यार से सभी मनाते।
होली हो या ईद खुशी से, सबको गले लगाते।

सद्भावों का स्वर्ग से सुन्दर दिखता यहाँ नज़ारा।
सारे जग से सुन्दर प्यारा, भारत देश हमारा।

कभी न भूलो

- जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।
- सहनशीलता कमजोरी नहीं, बल्कि बल की सूचक है।
- उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है।
- स्वस्थ विचार ही मन को स्वस्थ करने में सहायक होते हैं।

– निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

- सन्तों की संगत से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

– निरंकारी राजमाता जी

- धैर्य तो विवेक का साथी है। ताकत और दबाव की तुलना में धीरज रखकर अधिक पाया जा सकता है।

– ला फोंटेन

- सब्र जिन्दगी के मकसद का दरवाजा खोलता है क्योंकि सिवाय सब्र के उस दरवाजे की कोई कुंजी नहीं है। – शेख सादी
- दूसरों का जो आचरण तुम्हें पसंद नहीं है, वैसा आचरण तुम भी दूसरों के प्रति मत करो। – कन्फ्यूशियस
- याद रखो राष्ट्र झोपड़ी में रहता है, तुम्हारा फर्ज है कि जगह–जगह जाओ, गाँव–गाँव में और लोगों को समझाओ कि अब निकम्मे बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। उन्हें अपनी असली हालत का दर्शन कराओ और कहो कि भाईयो उठो! जागो!! कब तक सोते रहोगे? उनकी अपनी हालत सुधारने का रास्ता बताओ और उनको सरल और सीधे तरीके से शास्त्रों के सत्य को समझाओ। – स्वामी विवेकानन्द
- जिस घर में छोटे–बड़े सब मिलकर रहते हैं, वह घर अपने बल पर सदा सुरक्षित रहता है। – अथर्ववेद
- जिसके मन में संतोष है, उसके लिए हर जगह संपन्नता है।

– संस्कृत लोकोक्ति

- सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें, बल्कि यह है कि जो आप करें, वह अच्छा हो।

–जे. एम. स्वेअर्टयंग

कथा : श्रीमद्भगवद्पुराण से – शिखा जोशी

समर्पण से ही मुक्ति

बहुत पुराने समय की बात है। उन दिनों समुद्र और पर्वतों का स्वरुप प्रारम्भ काल में ही था। एक विशाल पर्वत था। उस पर्वत का नाम था त्रिकूट। उस विशाल पर्वत की तराई में एक भव्य वन था। उस वन में एक स्थान बहुत ही सुन्दर और लुभावना था। उसके बीचों–बीच एक सरोवर था। सरोवर के चारों ओर अनेक फलदार वृक्ष तथा औषधियों से सम्पन्न बेलें तथा पेड़ थे।

उस वन में एक विशाल हाथी भी रहता था। वह हाथी उस वन के सभी हाथियों का राजा था। सभी हाथी झुण्ड बनाकर उसी के साथ–साथ घूमते रहते थे। उस हाथी का नाम था गजेन्द्र। उसके शरीर में इतनी शक्ति व बल था कि उस जंगल का कोई भी जीव उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। इसीलिए वह सभी का स्वामी कहलाता था। वह चलता तो मानो जंगल के जीवों का काल आ गया हो। शेर, बाघ, चीते आदि अपनी जान बचाकर भागते फिरते। वह चिंघाड़ता तो प्रत्येक जीव भय खाकर वहाँ से भागता हुआ ही दिखाई देता था।

एक बार वही गजेन्द्र अपनी मस्त चाल से चलता हुआ जा रहा था। कई हाथी उसे घेरे हुए चल रहे थे। वह मस्त चाल से चलता हुआ निर्विघ्न चला जा रहा था। इतने में उसे भीनी–भीनी सुगन्ध ने आ घेरा। वह सुगन्ध की दिशा की ओर बढ़ने लगा। चलते–चलते वह उसी अद्भूत सरोवर पर जा पहुँचा। सरोवर का जल इतना स्वच्छ व निर्मल था कि उस गजेन्द्र से रहा न गया व तुरन्त सूंड में पानी भर कर पीने लगा। पहले तो उसने जी भरकर खूब पानी पीया तत्पश्चात् उसमें घुस कर नहाने लगा। सरोवर का निर्मल तथा शीतल जल उसके भारी भरकम शरीर को आनन्द देने लगा। उसे लगा कि 'मैं वास्तव में ही इतना बलशाली व विशाल हूँ कि भगवान ने स्वयं ही मेरे लिए यह सुन्दर

व विशाल सरोवर बना दिया है व फिर मुझे आकर्षित करने के लिए इसके तट पर सुगन्धित फूलों व फलों के वृक्ष लगा दिये हैं ताकि 'मैं', इस वन का राजा' सबसे उत्तम सरोवर का आनन्द ले सकूँ। यह सोचकर वह मद में भर गया व अपने सभी साथियों को सरोवर में घसीट लिया। फिर उन पर अपनी लम्बी सूँड से पानी बरसाने लगा। इस पर दूसरे हाथी भी अपनी–अपनी सूँड में पानी भरकर बौछार रूप में अपने स्वामी पर डालने लगे। बहुत समय तक यही खेल चलता रहा। गजेन्द्र खुद को सर्वोत्तम व शक्तिमान समझकर सभी कुछ अपने लिए हुआ मान रहा था तभी तो वह इतना मदमस्त हो गया था कि वह इस बात को भूल ही गया था कि ये मायाजाल तो शायद उसके अहंकार को तोड़ने के लिए ही रचा गया था। वह इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ था कि उसके सिर पर बहुत बड़ी विपत्ति मंडरा रही है।

उसी सरोवर में कहीं एक विशाल मगरमच्छ रहता था। वह थक–हार कर वहीं आराम कर रहा था। गजेन्द्र के सरोवर में आने के बाद तथा अपने साथियों सहित क्रीड़ा करते रहने के कारण सरोवर के जल में बहुत अधिक तीव्रता आ गई थी। यह अनवरत् उथल–पुथल नहीं रूकी तो विश्राम कर रहे मगरमच्छ को क्रोध आ गया। वह अपने स्थान से उठा और बड़ी तेजी से हुंकारता हुआ मस्त हुए हाथी की ओर बढ़ने लगा। हाथी तो पहले ही अपने मद में चूर बेखबर हो क्रीड़ा कर रहा था। उसे मगरमच्छ के उस तक पहुँच जाने का पता तक न चला। देखते ही देखते मगरमच्छ ने गजेन्द्र का पाँव अपने विशाल व शक्तिशाली जबड़े में जकड़ लिया। फिर गजेन्द्र को वह सरोवर के बीच में खींचने लगा। खिंचाव पड़ने पर गजेन्द्र को होश आया कि वह सरोवर में खींचा चला जा रहा है। तब उसने अपनी पूरी शक्ति को एकत्र किया व झटका देकर उस मगरमच्छ को बाहर खींच लिया। परन्तु दूसरे ही पल मगरमच्छ ने हाथी को पुनः सरोवर के भीतर खींच लिया। उधर जब हाथी सरोवर में काफी अन्दर तक चला गया तो उसके साथी हाथी हतप्रभ से उसे देखने लगे। उन सभी ने मिलकर

उसे बाहर निकालने का भरसक प्रयास किया। परन्तु सब मिलकर भी उसे पूरी तरह बाहर न निकाल सके तो सभी हाथी लाचार हो गये व फिर रोने–चिल्लाने लगे। परन्तु वे कर कुछ नहीं सके।

सभी सहायकों के चले जाने के बाद गजेन्द्र ने अपनी पूरी शक्ति केन्द्रित की और स्वयं ही अपनी ताकत के अनुसार अपने पाँव को स्वतंत्र कराने का प्रयास करने लगा। गजेन्द्र व मगरमच्छ अपनी–अपनी पूरी शक्ति लगाकर आपस में भिड़े हुए थे। कभी गजेन्द्र उसे बाहर खींच लेता तो कभी मगरमच्छ उसे सरोवर के भीतर खींच ले जाता। इस प्रकार लड़ते–लड़ते उन्हें कई दिन बीत गये। दोनों ही हार नहीं मान रहे थे।

अन्त में बहुत दिनों तक बार–बार जल में खींचे जाने के कारण गजेन्द्र का शरीर अब शिथिल पड़ गया। न तो उसके शरीर में बल शेष रह गया न मन में उत्साह। शक्ति भी क्षीण हो गईं दूसरी ओर मगरमच्छ तो वैसे जलचर था। इसीलिए उसकी शक्ति कम न हुई बल्कि बढ़ती गई। वह बड़े उत्साह से और भी बल लगाकर गजेन्द्र को भीतर खींचने लगा।

इस प्रकार देहाभिमान से ग्रस्त गजेन्द्र अकस्मात् अब घबरा गया। अब उसे लगने लगा कि उसके प्राण संकट में पड़ गये हैं। उसे लगा कि शायद उसके प्राण अब बच नहीं पायेंगे। बहुत देर तक उसने अपने छुटकारे के उपाय पर विचार किया। अन्त में वह इस निश्चय पर पहुँचा 'यह ग्राह (मगरमच्छ) तो विधाता की फाँसी ही है। इसमें फँसकर तो मैं अब आतुर हो रहा हूँ, उसने सोचा, 'मेरे जैसे ही शक्तिशाली दूसरे हाथी भी जब जोर लगाकर मुझे इस विपत्ति से छुड़ा नहीं सके तो भला मैं इस विपत्ति को काल क्यों न कहूँ? ये सब सोचते ही उसका पूरा देहाभिमान काफूर हो गया। उसे लगा कि मेरी पूरी शक्ति ही अब नष्ट हो गई है, यह विचार आते ही उसे

प्रभु की याद हो आई। वह हर प्रकार से यही प्रार्थना करने लगा। उसने अपनी समस्त इंद्रियों को एकाग्र किया व प्रभु की स्तुति करने लगा।

वास्तविकता भी यही है कि जैसे ही मनुष्य अपने अहंकार को छोड़ देता है, उसमें ऋणात्मक शक्तियों का ह्रास हो जाता है तथा वह शक्ति सम्पन्न हो जाता है। प्रभु उसी रूप में जीव की सहायता करता है। ऐसा ही गजेन्द्र के साथ भी हुआ। जैसे ही उसने अहंकार को छोड़ा उसमें उत्साह भर गया, भगवान ने उसकी मदद की। उसने श्रद्धा से उसी सरोवर में उगे एक कमल के फूल को तोड़ा व अपनी सूँड में उठाकर उसे अपने मस्तक तक उठा लिया इतने में ही उसे लगा कि जैसे सुदर्शन चक्र बड़ी तेजी से घूमता हुआ मगरमच्छ के गले से जा टकराया है। सुदर्शन चक्र गले से टकराते ही मगरमच्छ का मुँह पूरा खुल गया। मुँह खुलते ही गजेन्द्र का पाँव स्वतः मगरमच्छ के मुँह से छूट गया। गजेन्द्र बन्धन मुक्त हो गया। मगरमच्छ मर गया। गजेन्द्र भाव–विभोर हो उठा। उसका अहंकार समाप्त होते ही प्रभु–कृपा हो गई। वह हमेशा के लिए अहंकार से मुक्त हो गया।

–कहानी की वास्तविकता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि जब तक देहाभिमान, ताकत या श्रेष्ठता का अभिमान मन में रहता है, तब तक प्रभु की कृपा सम्भव नहीं होती। अहंकार के जाते ही वह प्रभु का कृपापात्र बन जाता है।

कविता : दीपक कुमार 'दीप'

बसंत ऋतु

आया बसंत झूम–झूम के,
लाया हरियाली चारों ओर।
खुशी मना रहा हर इक जन,
नाच उठे कोयल और मोर।।

छेड़े हवाओं ने सुर ताल,
भौंरों से गुंजार किया।
मिलजुल करके सबने सबको,
ऋतु बसंत का उपहार दिया।।

आम के पेड़ लदे बौरों से,
पीले पत्ते झड़ गये सारे।
कोयल रानी लगी कूकने,
खुशियों ने है पंख पसारे।।

छटा देख मनमोहक झरने,
बहने लगे धरा पर कल–कल।
नदियां बहने लगीं तोड़ तट,
कहा बसन्त ने ज़रा संभलकर।।

सब ऋतुओं में प्रिय बसंत है,
साल में आता है इक बार।
सदा बसंत रहे जीवन में,
'दीप' सुखी हो कुल संसार।।

जन्मदिन मुबारक

आदित्य (द्वारका)

आरजू (डेरा बस्सी)

यश (गोदिया)

हियानी (बालक)

मानव (दिल्ली)

एकमप्रीत (करीदकोट)

मनीश (भंगाला)

लतिका (आगरा)

राहत (रामपुराफुल)

नंदिनी (घाटकोपर)

पृथ्वी (मुर्तिजापुर)

तनवीर (अम्बिकापुर)

विश्वास (शहजादपुर)

विनीत (हिंगनघाट)

बंटी (बड़ुआ)

इंदेश (कोटा)

दिव्यांशु (गुलाबपुरा)

ब्रज (जबलपुर)

भक्ति (परतवाडा)

विश्वास (जोहरपुर खेड़ी)

यश (सडडोल)

अनुष्का (दिल्ली)

साक्षी (पाखोरा)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
राजू छोड़ मुझे छोड़।
दोनों झगड़ा बंद करो और एक कहानी सुनो।
एक गाँव में बुढ़ा और बुढ़िया बड़े प्रेम से रहते थे।

तीर्थयात्रा पर जाने को मन हो रहा है।
लेकिन घर में इतने पैसे नहीं है।
उन्होंने कुछ पालतू जानवर पाल रखे थे।
क्यों न हम गाय को बेच दें। अच्छे पैसे मिल जायेगें।
ठीक है, मैं अभी गाय बेचने जाती हूँ।
यह बात तीन ठग सुन रहे थे, उन्होंने बुढ़िया को ठगने की योजना बनाई।
खुसर फुसर.....खुसर फुसर।
अरी माई यह बकरी कहाँ लेकर जा रही हो?
अंधे, यह गाय तुझे बकरी नज़र आ रही है। चल भाग यहाँ से।

दूसरा ठग...। इतनी दोपहरी में माई बकरी को लेकर कहाँ जा रही हो?
बुढ़िया को अब अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।
जब तीसरे ठग ने भी गाय को बकरी कहा तो बुढ़िया उसी ठग को अपनी गाय बकरी के मूल्य पर बेचकर घर आ गई।
बुढ़िया ने सारी कहानी अपने पति से बताई तो बुढ़े ने बदला लेने की ठानी।
बुढ़े ने अपनी तरकीब बुढ़िया को बता कर अपने दो खरगोशों में से एक को लेकर बाज़ार में जाकर बैठ गया।
तीनो ठग लोग उसकी पत्नी का मज़ाक उड़ाते हुये उसी ओर आ रहे थे।
उसी समय..

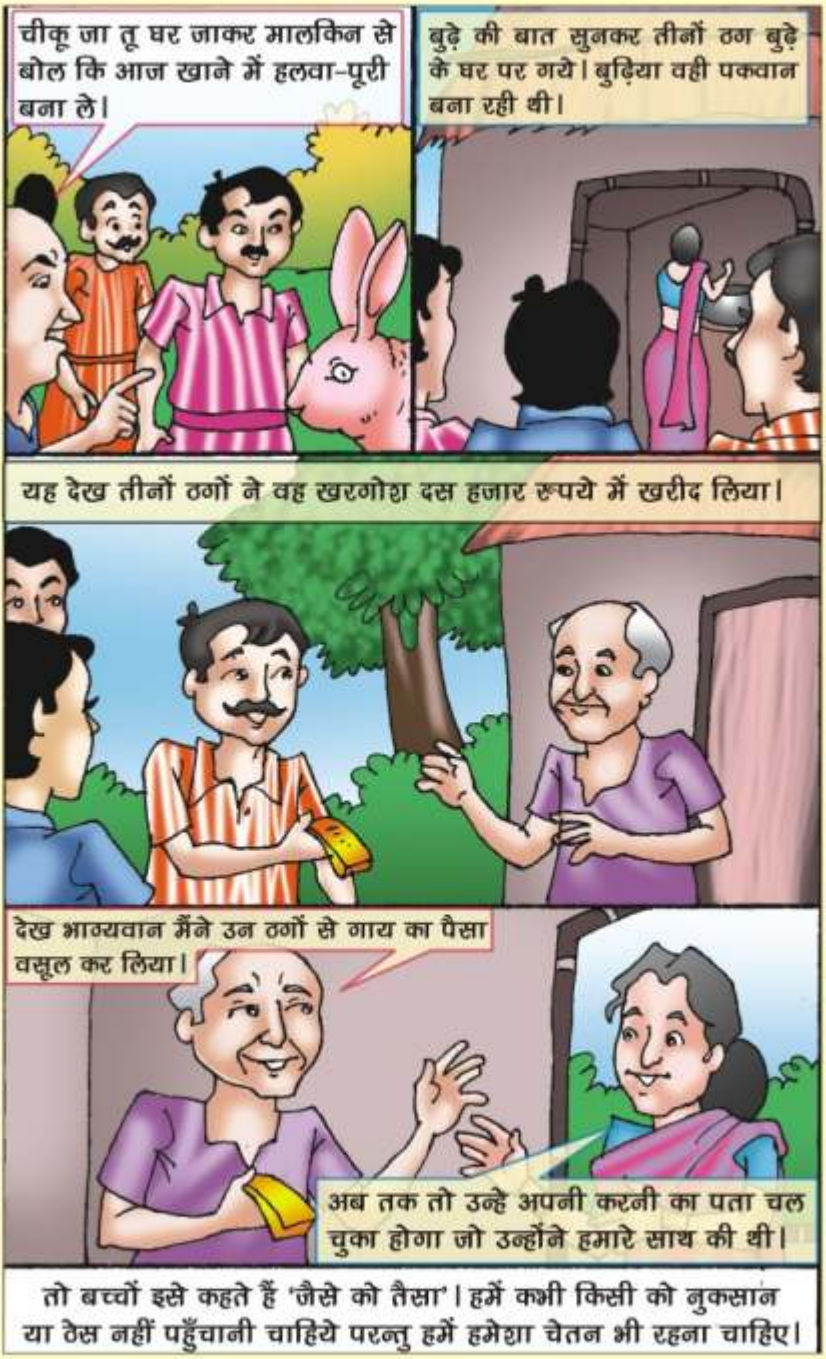
चीकू जा तू घर जाकर मालकिन से बोल कि आज खाने में हलवा-पूरी बना ले।
बुढ़े की बात सुनकर तीनों ठग बुढ़े के घर पर गये। बुढ़िया वही पकवान बना रही थी।
यह देख तीनों ठगों ने वह खरगोश दस हजार रूपये में खरीद लिया।
देख भाग्यवान मैंने उन ठगों से गाय का पैसा वसूल कर लिया।
अब तक तो उन्हे अपनी करनी का पता चल चुका होगा जो उन्होंने हमारे साथ की थी।
तो बच्चों इसे कहते हैं 'जैसे को तैसा'। हमें कभी किसी को नुकसान या ठेस नहीं पहुँचानी चाहिये परन्तु हमें हमेशा चेतन भी रहना चाहिए।

आकाशगंगा में हैं जीवन की संभावना वाले 10 करोड़ ग्रह

वाशिंगटन। हमारी आकाशगंगा में ऐसे 10 करोड़ से अधिक ग्रह हो सकते हैं जहाँ जीवन के होने की संभावना है। एक नये अध्ययन में यह बात कही गई है। शोधकर्ताओं ने दूसरे तारों की परिक्रमा कर रहे ग्रहों के आंकड़ों की जांच के लिए एक नई संगणना का विकास किया है जिससे हमारी आकाशगंगा में मौजूद ऐसे ग्रहों की संख्या में पहला मात्रात्मक अनुमान प्राप्त होता है जिनमें सूक्ष्मजीव स्तर से ऊपर जीवन के होने की संभावना है।

शोधकर्ताओं ने 'चैलेंजेज' पत्रिका में छपे एक अध्ययन में कहा, "इस अध्ययन से यह संकेत नहीं मिलता कि इतने सारे ग्रहों पर जटिल जीवन है। हम कह रहे हैं कि ऐसी भूमंडलीय दशाएं हैं जो जीवन के होने के लिए जरूरी होती हैं। जीवन की उत्पति के सवालों पर ध्यान नहीं दिया गया है, केवल जीवन के लिए जरूरी दशाओं की बात कही गई है।"

यूनिवसिर्टी ऑफ टेक्सास–अलपासो के प्रोफेसर लुई इरविन के नेतृत्व में किए गए अध्ययन में कहा गया, 'जटिल जीवन का मतलब बौद्धिक जीवन से नहीं है। हालांकि जानवरों तक के जीवन की संभावना को भी खारिज नहीं किया है बल्कि बस यही बात कही गई कि सूक्ष्मजीवों से अधिक बड़े और जटिल जीव अलग–अलग रूपों में हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र में पाए जाने वाले जीवों की तरह स्थिर खाद्य चक्र का निर्माण करने वाले जीव।'

मिला धातु खाने वाला वृक्ष

आस्ट्रेलिया/फिलिपीन। आस्ट्रेलिया और फिलिपीन के वैज्ञानिकों ने एक ऐसे वृक्ष का पता लगाया है जो निकेल धातु खाता है। इस पेड़ का नाम रिनोरेया निक्कोलीफेरा है। डेढ़ मीटर से 1.8 मीटर ऊंचे इस वृक्ष का तना आम तौर पर 13 सेंटीमीटर मोटा होता है और इस पर एक सेंटीमीटर से कम मोटाई वाले फल लगते हैं। रिनोरेया निक्कालीफेरा की पत्तियों में

निकेल की मात्रा आमतौर पर पत्तियों में पाई जाने वाली मात्रा से हजार गुना ज्यादा होती है। यह पेड़ आमतौर पर फिलिपीन के लुसोन द्वीप पर चट्टानी इलाके में या खाली पड़े मैदानों में पाया जाता है। इस इलाके की मिट्टी में भारी धातुओं की भरमार है। वैज्ञानिकों का मानना है कि रिनोरेया निक्कोलीफेरा की तरह के पौधे मिट्टी में पाई जाने वाली धातुओं से मिट्टी की सफाई कर सकते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इस पौधे को अन्यत्र उगाने में सबसे बड़ी बाधा यही पैदा होती है कि ये पौधे दूसरे पर्यावरण और वातावरण में विकसित नहीं होते। उनका विकास रुक जाता है।

जानवरों को भी होता है दोस्ती का एहसास

कैलिफोर्निया। अमेरिका के कैलिफोर्निया में 'मिस्टर जी' नाम के एक बकरे को कुछ समय पहले एक पशु आश्रय में बसाया गया था। लेकिन वहाँ यह बकरा बहुत उदास रहने लगा। बात यह निकली कि 'मिस्टर जी' का 'जैलीबीन' नाम का एक गधा दोस्त था। कुछ समय पहले इन दोनों को जुदा कर दिया गया था। इन जानवरों को अलग करने वाले विशेषज्ञों को इस बात का कोई ज्ञान नहीं था कि ये दोनों जानवर बहुत अच्छे दोस्त थे। लेकिन उन्होंने इस बात को जरूर नोट किया कि जब से बकरे को नई जगह पर लाया गया है तब से ही वह बहुत उदास रहने लगा है। वह न कुछ खाता था और न ही कुछ पीता था। वह छह दिन तक एक ही जगह पर लेटा रहा और उसने पशु आश्रय से बाहर जाकर घूमने–फिरने से भी इंकार कर दिया। एक दिन बकरे ने अचानक ही अपने सबसे अच्छे दोस्त 'जैलीबीन' की आवाज सुन ली। बकरा बहुत खुश हुआ और वह उठकर पशु आश्रय से बाहर चला गया और वहाँ उसने अपने दोस्त 'जैलीबीन' को देख लिया। उसके 20 मिनट बाद ही बकरे ने भोजन करना शुरू कर दिया।

–संकलनकर्ता : बबलू कुमार (दिल्ली)

वर्ग पहेली

– विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

बाएं से दाएं →

1. खुला का विपरीत शब्द।
3. महमूद गजनवी ने भारत पर ... बार आक्रमण किया था।
5. शोलापुर और कानपुर में से जो शहर महाराष्ट्र राज्य में स्थित है।
6. विदेश का विपरीत शब्द।
7. एक फल का नाम।
9. सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी के आ जाने से ... ग्रहण पड़ता है।
10. कर्नाटक राज्य में बोली जाने वाली मुख्य भाषा।

ऊपर से नीचे ↓

1. भारत का जो पड़ोसी देश सन् 1971 से पहले पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था।
2. इस वाक्य में छुपा दोस्त का एक पर्यायवाची शब्द ढूंढिए : सत्यजीत सौमित्र का भाई है।
3. विद्या की देवी।
4. इनमें से जो एक सत्यवादी राजा थे : हरिशचन्द्र, नेपोलियन, आर्यभट्ट।
7. अणु के जिस भाग के चारों तरफ इलैक्ट्रोन घूमते हैं।
8. इंग्लैण्ड की मुद्रा का नाम।
9. थोथा ... बाजे घना यानि ओछा व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

रोचक प्रसंग : ईलू रानी

चतुर शोफर

विश्व प्रसिद्ध डॉक्टर क्रिश्चियन बर्नाड को प्रथम हृदय प्रतिरोपण (दिल बदलने) के बाद इतनी अधिक सभाओं में भाषण देने पड़े कि वे ऊब गये।

वे एक दिन भाषण देने जा रहे थे। अपने नौकर से बोले– "आज दिनभर के लिए तुम सर्जन बन जाओ। मैं शोफर बन जाता हूँ। मेरी जगह आज तुम भाषण देना।"

नौकर तैयार हो गया।

सभा–स्थल पहुँचकर बर्नाड का सूट पहने शोफर मंच पर आया। उसने बर्नाड के पूर्व के भाषण सुन रखे थे। चतुर भी वह काफी था। अच्छा भाषण दिया।

भाषण की समाप्ति पर प्रश्न शुरू हुए। उसने जवाब भी सन्तोषप्रद दे दिये। सभा में एक ख्याति प्राप्त सर्जन भी मौजूद थे, उन्होंने सर्जरी में एक गूढ़ प्रश्न कर दिया–

शोफर भी कम न था, बोला– "आप जैसे महान सर्जन से ऐसे बचकाने सवाल की आशा न थी। इसका उत्तर तो मेरा शोफर भी दे सकता है।"

कहते हुए उसने शोफर की वेषभूषा में मंच के निकट ही मौजूद बर्नाड की ओर इशारा कर दिया।'

बर्नाड ने आगे बढ़कर उस गूढ़ प्रश्न का उत्तर तुरन्त देकर विशाल सभा को चमत्कृत कर दिया।

• • •

अंतरिक्ष और आकाश में क्या अन्तर है?

आकाश पूरे ब्रह्माण्ड का सूचक है जिसमें हमारी पृथ्वी भी सम्मिलित है, जबकि अंतरिक्ष का अर्थ पृथ्वी को छोड़कर शेष सभी स्थान है।

–प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

जंबू-शंभू दोस्त बने

विद्यालय के हर क्षेत्र और अध्यापकों के मन में रह रह कर एक ही सवाल उमड़ रहा था। सभी हैरान थे कि जंबू भालू और शंभू भालू दोस्त कैसे बने? जिन दो विद्यार्थियों की लड़ाई के कारण सभी अध्यापक तंग थे और छात्र विचलित, वे अब जिगरी दोस्त कैसे बने?

चंपक वन के विद्यालय की ख्याति दूर–दूर थी। जंबू और शंभू भालू भी अन्य जानवरों के साथ यहाँ पढ़ने आते थे। जंबू यों तो अच्छा विद्यार्थी था परन्तु शंभू सदा ही जंबू का मजाक उड़ाता रहता। इस कारण दोनों में आए दिन झगड़ा हो जाता।

कोई भी छात्र जंबू या शंभू भालू का पक्ष नहीं लेता न ही उनके झगड़े में पड़ता। यदि कोई उन्हें समझाने की कोशिश भी करता तो उसकी ये पिटाई कर देते।

एक दिन घोषणा हुई कि चंपक वन सहित पड़ोस के जंगल के चारों विद्यालयों के पन्द्रह–पन्द्रह छात्र ट्रेकिंग पर जाएंगे। कल कोच हाथी दादा ट्रेकिंग पर जाने वाले छात्रों का चयन करेंगे। चयनित छात्रों को पांच दिन प्रशिक्षण दिया जाएगा।

जंबू व शंभू दोनों का ही चयन ट्रेकिंग के लिए हो गया था। ट्रेकिंग दल पांच दिन बाद रवाना हुआ। ट्रेकिंग के लिए मधुबन की भव्य ऊँची पहाड़ियों को चुना गया था। मोटू हाथी, झमकू शेर, काली बकरी, मुनमुन मेमना, चिरमी भेड़िया, पीकलू हिरण, झबरा भालू सहित लगभग 60 छात्र ट्रेकिंग के लिए आये थे। सबको बहुत मजा आ रहा था।

कोच हाथी दादा सबको ट्रेकिंग के गुर बता रहा था व सावधानी रखने की हिदायत भी दे रहा था।

शंभू भालू तो हमेशा इसी ताक में रहता कि जंबू का मजाक उड़ाया जाए। उसने कई बार जंबू भालू का मजाक उड़ाया परन्तु दूसरे विद्यालयों के छात्रों के साथ होने की वजह से वह सब कुछ सहता रहा।

ट्रेकिंग के अंतिम दिन उन्हें पहाड़ी की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ना था। हालांकि मौसम बहुत अच्छा नहीं था परन्तु सभी छात्रों ने चढ़ाई शुरू कर दी।

थोड़ी ही देर बाद मौसम खराब हो गया। हवा एकदम बर्फीली थी। सब छात्र पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। अचानक एक बड़ा–सा पत्थर लुढ़कने लगा। यह देखकर सभी छात्र डर गए।

अचानक जिस रस्सी को पकड़कर शंभू नीचे उतर रहा था वह पत्थर उससे टकरा कर दूसरी ओर जा गिरा। इस तरह शंभू भालू की रस्सी कट गई और वह पास की एक गहरी खाई में जा गिरा।

ऐसी हालत में कोई भी छात्र अपनी जान जोखिम के डाल कर शंभू भालू को ऊपर लाने का साहस नहीं कर पा रहा था।

मोटू हाथी, लंबू जिराफ, मुनमुन मेमना, सोनू लोमड़, पीकलू हिरण आदि ने खाई में उतरने का प्रयास किया भी पर सब डर कर पीछे हट गये।

जंबू भालू ने पहले तो सोचा कि अच्छा ही हुआ कि दुश्मन खाई में गिर गया। परन्तु तुरंत उसे अपनी माँ की बात याद आ गई, ''बेटा, जब भी कोई मुसीबत में हो तो सोचो यदि वह तुम्हारा ही कोई रिश्तेदार या तुम स्वयं होते तो?''

अब हिम्मत कर जंबू खाई की ओर बढ़ने लगा। उसने नीचे पहुँच कर देखा कि शंभू बेहोश है उसे चोट भी लगी हुई है। जंबू ने अपने बैंग से एक रस्सा निकला और उससे शंभू को अपनी पीठ पर कस कर बांध दिया।

ऊपर खड़े साथियों ने भी एक मजबूत रस्सा पेड़ से बांध कर खाई में डाल दिया। जंबू, शंभू को पीठ पर लिए सावधानीपूर्वक रस्सी के सहारे खाई से बाहर आ गया।

तुरंत शंभू को जंगल के प्रसिद्ध डॉक्टर पूसी बिल्ली के अस्पताल में भर्ती कराया गया। दो दिन बाद शंभू को होश आया तो उसने अन्य जानवरों के साथ जंबू को भी सामने खड़ा पाया। जंबू अपने घर भी नहीं गया था। पूरे समय अस्पताल रहकर शंभू की देखभाल करता रहा था।

सारी बात पता चलने पर शंभू की आंखों से आंसू उमड़ आए। उसने जंबू से अपने पहले के किए बरताव के लिए माफी मांगी और उसे दोस्त बना लिया। जंबू भालू को नए साल का दोहरा तोहफा मिल गया यानी शंभू की मित्रता और विद्यालय की ओर से बहादुरी का ईनाम।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर 'न' अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पेन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1 : किस पाण्डव के धनुष का नाम गाण्डीव था? ..... न

प्रश्न 2 : गणगौर किस भारतीय राज्य का उत्सव है? .... न

प्रश्न 3 : ईरान देश की राजधानी का क्या नाम है? ...न

प्रश्न 4 : राजा दशरथ का सबसे छोटा पुत्र कौन था? .... न

प्रश्न 5 : राष्ट्रपति भवन में रहने वाले पहले वायसराय कौन थे? ..... न

प्रश्न 6 : भगवान विष्णु के किस अवतार ने तीन कदमों में तीनों लोकों को नाप लिया था? .... न

प्रश्न 7 : किस गैस को मनुष्यों के लिए जीवनदायी गैस कहा जाता है? .... न

प्रश्न 8 : स्वामी विवेकानन्द ने किस मिशन की स्थापना की थी? .... न

प्रश्न 9 : भारत का सर्वोच्च खेल सम्मान कौन–सा है? .... न

प्रश्न10 : भारत का उपराष्ट्रपति बनने के बाद राष्ट्रपति बनने वाले पहले व्यक्ति का नाम क्या था? .... न

प्रश्न 11 : प्राचीन विश्वविद्यालय तक्षशिला वर्तमान में किस देश में स्थित है? .... न

प्रश्न 12 : भारत रत्न सम्मान पाने वाले पहले विदेशी कौन थे? .... न

प्रश्न 13 : सुभद्रा भगवान श्रीकृष्ण की रिश्ते में क्या लगती थी? .... न

प्रश्न14 : जवाहर लाल नेहरू के दिल्ली स्थित आधिकारिक निवास को क्या कहते हैं? .... न

प्रश्न 15 : श्रीलंका का पुराना नाम क्या था? .... न

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कविता : घमंडीलाल अग्रवाल

अपने को गुणवान करो

काला–काला श्यामपट्ट है,
सुघड़ लिखाई करवाए।
काली–काली होती कोयल,
वाणी में मिठास लाए।।

काले–काले बाल देह के,
गरमी–सरदी सह लेते।
काले–काले जूते भी तो,
पांवों को ऊष्मा देते।।

काली होती हैं भैंस किन्तु वह,
देती दूध लाभकारी।
काले अक्षर हैं किताब के,
जिनकी है महिमा न्यारी।।

मत तुम देखो रूप–रंग को,
सदा गुणों पर ध्यान धरो।
मूलमंत्र यह ही जीवन का,
अपने को गुणवान करो।।

ज्ञान–विज्ञान : राधा नाचीज

गुरुत्वाकर्षण के आविष्कार

बच्चों, तुमने बाग में खेलते हुए देखा होगा कि आम पेड़ से टपककर सीधा धरती पर गिरता है। यदि तुम्हारे हाथ से पैंसिल छूट जाए तो वह भी धरती पर गिरती है। क्या कभी तुमने सोचा है कि वस्तुएं धरती पर क्यों गिरती हैं? आज से तीन सौ वर्ष पहले एक आदमी ने भी अपने आप से यही प्रश्न किया था। वह बाग में टहल रहा था कि एक सेब पेड़ से टूटकर धरती पर गिरा और वह सोचने लगा कि ऐसा क्यों होता है? वस्तुएं धरती पर क्यों गिरती हैं? तब उसने पता लगाया कि धरती में एक ऐसी शक्ति है, जो प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। इस खोज के कारण उस आदमी ने विज्ञान के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर ली। इस आदमी का नाम आइजक न्यूटन था।

उसने प्रकाश के बारे में भी अनुसंधान किया। न्यूटन यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहा था कि प्रकाश क्या चीज है और यह किस प्रकार पैदा होती है? उस समय तक सामान्य विचार यही था कि प्रकाश एक प्रकार का रंग है, जो कई नक्षत्रों और अन्य वस्तुओं की चमक से उत्पन्न होता है। न्यूटन ने यह सिद्ध किया कि प्रकाश कोई रंग नहीं है। अपितु ये छोटे–छोटे कण हैं जो चमकदार वस्तुओं और नक्षत्रों से निष्कासित होकर वायुमंडल में फैलते हैं। न्यूटन का मत था कि प्रकाश एक सैंकेंड में 90 हजार मील की दूरी तय करता है, परन्तु बाद में पता चला कि प्रकाश की गति एक लाख छियासी हजार मील प्रति सैंकेंड है। ■

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

1. अर्जुन के 2. राजस्थान का 3. तेहरान 4. शत्रुघ्न 5. लार्ड इरविन 6. वामन अवतार ने 7. आक्सीजन को 8. रामकृष्ण मिशन 9. राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार 10. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 11. पाकिस्तान में 12. अब्दुल गफ्फार खान 13. बहन 14. तीन मूर्ति भवन 15. सिलोन।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

असलियत

समनीत सातवीं कक्षा में थी। उसके पिताजी एक कम्पनी में कर्मचारी थे।

एक सुबह समनीत स्कूल जा रही थी। जब वह स्कूल के गेट पर पहुँची तो उसने एक छोटे से लड़के को देखा। उसकी एक बाजू नहीं थी। वह कुछ सामान बेच रहा था। उसके पास गुब्बारे, पेंसिलें, रबड़ें, कुछ कापियां और कुछ छोटे–छोटे खिलौने भी थे। उसने 'वी शेप' की एक पुरानी चप्पल पहनी हुई थी। उसने अपनी टूटी चप्पल को सूई धागे से सी रखा था। इतनी ठंड में सुबह–सुबह सामान बेचता देख कर समनीत का मन पसीज गया। उसने ध्यानपूर्वक उसकी वस्तुओं को देखा। वह उसके पास रूक गई। फिर न जाने क्या सोचकर उसने अपने बैग से दस रुपये निकाले और दो पैंसिलें खरीद लीं जबकि उसके पास पहले से ही एक नई पैंसिल थी।

प्रार्थना आरम्भ हो गई लेकिन समनीत का ध्यान उस लड़के में ही था। सोच रही थी, ''बेचारा, कितनी ठंड में सुबह–सुबह आकर सामान बेच रहा है। उसके पास जुराबें तो दूर की बात, बूट भी नहीं हैं। मुझे तो जूतों में भी ठंड लग रही है।''

छुट्टी की घंटी बजी। समनीत सहेलियों के साथ बाहर निकली। उसने देखा, वह लड़का अब भी वहीं खड़ा था।

वह लड़का हर रोज स्कूल के गेट के बाहर आकर खड़ा हो जाता और सामान बेचता। समनीत स्कूल पहुँचती तो गेट पर वही लड़का पहले से ही आ चुका होता। अब उस लड़के की समनीत से जान पहचान हो गई थी। वह उसे 'दीदी' बोलने लगा। उस लड़के का अपने प्रति ऐसा अच्छा और आदरपूर्वक स्वभाव देखकर समनीत के मन में भी उसके प्रति स्नेह पैदा होने लगा। समनीत उस लड़के से लगभग तीन वर्ष बड़ी थी।

एक दिन समनीत स्कूल के गेट पर आई और उस लड़के से फिर कोई वस्तु खरीदने के बहाने उस के पास आ खड़ी हुई। उसके साथ उसकी सहेलियां रानी और शालू भी थीं। उस लड़के ने जब समनीत को 'दीदी' कह कर सम्बोधित किया तो रानी और शालू ठहाके लगाने लगीं।

अगले दिन कक्षा में आते ही रानी और शालू ने शोर मचा दिया, ''अरे जानते हो, समनीत का एक और भाई भी है लेकिन वो बेचारा गेट पर खड़ा होकर गुब्बारे बेचता है।''

इस तरह उस लड़के को लेकर कई और मजाक भी समनीत को सुनने को मिले लेकिन उसने किसी की कोई परवाह नहीं की। अब तक समनीत जान चुकी थी कि उसका नाम बब्बू है। उसे यह भी पता चला कि वह पांचवी कक्षा में पढ़ता था तब उसकी माँ गुजर गई थी। उसका पिता भी खिलौने बेचने का काम करता था। उस लड़के की चार बहनें और थीं। अपने बच्चों को पढ़ाना उसके वश में नहीं था।

सर्दी दिन–ब–दिन और ज्यादा बढ़ती जा रही थी। लेकिन बब्बू अभी तक बूट नहीं खरीद सका था।

एक दिन समनीत ने पूछा ही लिया, ''बब्बू, क्या तुमको ठंड नहीं लगती?''

''नहीं दीदी, मैं ठंड सहने का आदी का हो गया हूँ।'' बब्बू ने कहा लेकिन समनीत को पता था कि यह गरीबी के कारण ही था।

एक दिन समनीत ने पापा से कहा, ''पापा, मुझे दो सौ रुपये चाहिए।''

''किसलिए?'' पापा ने पूछा।

''स्कूल में 'सर' ने मंगवाये हैं। बिल्डिंग फंड देना है।''

''स्कूल वालों का पेट भी पता नहीं कब भरेगा?'' कभी ये फंड कभी वो फंड। आए दिन मांगते ही रहते हैं। सारा सारा दिन पसीना बहाना पड़ता है रुपया कमाने के लिए।'' आखिर आनाकानी करते हुए पिता जी ने उसे दो सौ रुपये पकड़ा दिये।

शाम को समनीत की सहपाठिका शालू उसके घर आई। बातों ही बातों में समनीत की माता जी ने उससे पूछा, ''शालू तुम्हारे स्कूल वालों का लालच कब खत्म होगा? आज फिर तुम से दो–दो सौ रूपये मांग लिए हैं।''

"क्या आंटी जी? दो–दो सौ रुपये? किस से मांगे हैं?" फिर वह समनीत की तरफ मुड़ी और पूछने लगी, "कब? किस से मांगे हैं दो–दो सौ रुपये? हम से तो नहीं मांगे?"

अब समनीत को काटो तो खून नहीं। उसका रंग पीला पड़ गया। अब उसने सच बोलना ही ठीक समझा, "मम्मी, मुझे माफ कर दो। वास्तव में मेरे स्कूल के गेट पर एक छोटा–सा अपंग लड़का खिलौने बेचता है। इतनी सर्दी में उसके पास टूटी–सी चप्पल ही थी। मैंने उन दो सौ रुपये के उसे नये बूट लेकर दिये हैं। आप मुझे अगले महीने का जेब खर्च मत देना।"

समनीत के पिता जी ने घर में प्रवेश किया। उन्होंने सारी बात सुन ली थी। असलियत सुन कर वह बोले, "तुमने झूठ बोलकर अच्छा तो नहीं किया। लेकिन तुम्हारा मकसद किसी बेहद जरूरतमंद बच्चे की मदद करना था। इसलिए तुम्हें डांट नहीं पड़ेगी बल्कि तुम्हारी नेक भावना के लिए मैं तुझे शाबाशी देता हूँ। तुम्हारे जेब खर्च में कोई कटौती नहीं होगी।"

समनीत पापा से लिपटती हुई बोली, "थैंक्यू पापा।"

प्रस्तुति : राधा नाचीज़ (नजफगढ़)

पहेलियां

1. सिर छोटा और पेट बड़ा,
   तीन टांग पर रहे खड़ा।
   खाता हवा और पीता तेल,
   फिर दिखलाता अपना खेल।

2. पानी से मैं पैदा होता,
   उजला मेरा रंग।
   स्वाद बढ़ाता घुलमिल,
   करके मैं भोजन के संग।

3. वीर साहसी सुभट महान
   सह न सका अपना अपमान।
   लूट लिए मुगलों के प्रदेश,
   याद करेगा अपना देश।

4. काला है पर काग नहीं,
   कहें नाग पर सांप नहीं।
   एक हाथ पर पैर चार,
   बतलाओ कर सोच–विचार।

5. एक अनोखा है चौपाया,
   भारी भरकम उसकी काया।
   नहीं सवारी का कुछ काम,
   पानी ही है उसका धाम।

6. हरे रंग की है पोशाक,
   बैठा सबसे ऊँची शाख।
   कुतर–कुतर फल खाता है,
   टें–टें कर उड़ जाता है।

7. कही जाती है 'रेडियम महिला'
   मिला दो बार नोबल सम्मान
   नाम बता दो इस महिला का
   तो समझूँ मैं तुम्हें बुद्धिमान।

8. रोज शाम को आ जाती है,
   और सवेरे चली जाती है।
   काली साड़ी पर असंख्य,
   जगमग मोती चमकाती है।

9. दाना–पानी कुछ नहीं लेती,
   रात–दिन चलती जाती।
   पल–पल बड़ा कीमती,
   हमकों ऐसा सबक सिखाती।

10. पत्थर की नाव पर,
    पत्थर एक सवार है।
    नाव लेकिन चलती नहीं,
    चलता सवार है।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें

मंगलग्रह के बारे में कुछ विशेष जानकारी

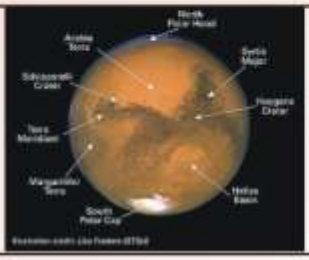

एक समय ऐसा आता है जब मंगल न सिर्फ पृथ्वी के बेहद नजदीक होता है बल्कि सूर्य भी उसके ठीक पीछे समान परिधि में होता है। इसी कारण यह लाल ग्रह (मंगल) 27 अगस्त 2003 को भी रात्रि में साफ तौर पर दिखाई देता रहा। यदि आप टेलीस्कोप की सहायता से देखें तो इसे स्पष्ट देखने में और भी आसानी मिलेगी। प्रस्तुत है इसके बारे में संक्षिप्त जानकारी –

- चन्द्रमा के बाद मंगलग्रह के बारे में ही हमें सबसे अधिक जानकारी है।
- इसका व्यास 6800 कि.मी. अर्थात् धरती से प्रायः आधा है।
- मंगल ग्रह 687 दिन में सूर्य का चक्कर एक बार सम्पूर्ण करता है। जबकि हमारी पृथ्वी 365 दिन में सूर्य का एक चक्कर लगा लेती है।
- मंगल ग्रह की सतह लाल दिखाई पड़ती है। क्योंकि इसके प्रायः 70 प्रतिशत भाग में लाल गेरुवे चमक दिखाई पड़ती है। इस लाल ग्रह को सबसे पहली बार ईस्वी सन् 1610 में गैलीलियों ने देखा था।
- प्रायः 780 दिन बाद सूर्य, पृथ्वी, मंगल एक सीध में आ जाते हैं। 8 जनवरी 1993, 12 फरवरी 1995, 17 मार्च 1997, 24 अप्रैल 1999 और 13 जून 2001 को ऐसा ही समय आया।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

पहेलियों के उत्तर :

1. स्टोव, 2. नमक, 3. शिवाजी, 4. हाथी, 5. दरियाई घोड़ा, 6. तोता, 7. मैडम क्यूरी, 8. रात, 9. घड़ी, 10. सिल–बट्टा।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

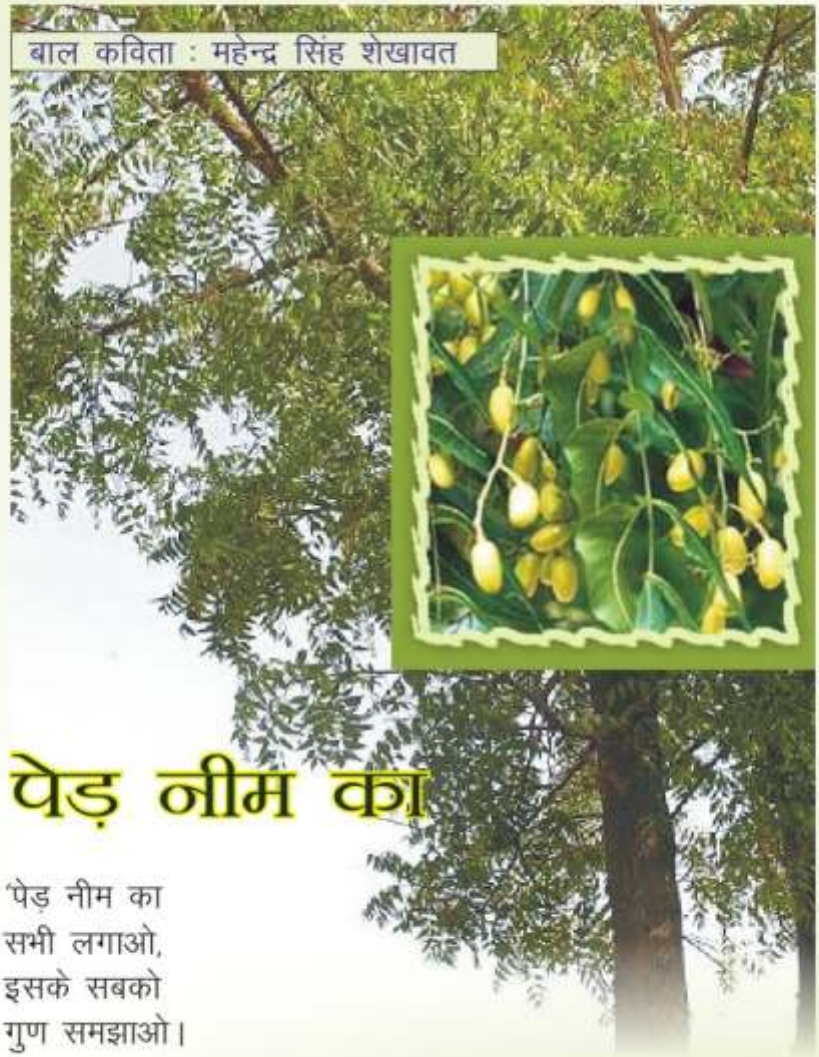

पेड़ नीम का

'पेड़ नीम का
सभी लगाओ,
इसके सबको
गुण समझाओ।

पत्ते–डाली
सब उपकारी,
इसकी छाया
भी गुणकारी।

पेड़ नीम का
जिस घर पाये,
रोग वहाँ पर
कभी न आये।

इसीलिए सब
नीम लगाते,
बड़े–बड़े सब
रोग भगाते।

भैया से पूछो

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

प्रश्न : संगत और सत्संग में क्या अंतर है?

उत्तर : किसी भी समूह में शामिल होना संगत है जबकि सत्य (ईश्वर) की भक्ति करने वाले लोगों का समूह सत्संग कहलाता है।

प्रश्न : हमारी वाणी और कर्म कैसा होना चाहिए?

उत्तर : शुद्ध पवित्र व दिखावे से दूर; जिससे स्वयं को तथा अधिकतम लोगों को सदा के लिए लाभ हो जाये।

प्रश्न : ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव कैसे किया जा सकता है?

उत्तर : किसी भी ईश्वर के ज्ञाता (ब्रह्मज्ञानी) से ईश्वर के दर्शन करके व फिर स्वयं शुद्ध जीवन जीने से।

– देवराज 'देव' (दोमाना)

प्रश्न : भैया जी! कृपया ब्रह्मज्ञान का मतलब समझाएं?

उत्तर : ब्रह्म का ज्ञान अर्थात् ईश्वर का ज्ञान।

प्रश्न : ब्रह्मज्ञान का मतलब भ्रमों से निकलना होता है?

उत्तर : ब्रह्मज्ञान भ्रमों से स्वतः ही छुटकारा दिला देता है।

– नेहा निकम (मेड़ता सिटी)

प्रश्न : कोई मूर्ख बुद्धिमान कब बनता है?

उत्तर : बुद्धि का सदुपयोग करने पर। यद्यपि इसके लिए पारंगत गुरु का होना आवश्यक है।

प्रश्न : धन निरंकार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : हे निराकार परमात्मा! तू धन्य है।

– रमाशंकर गुप्ता (बिलासपुर)

प्रश्न : प्राणायाम का क्या अर्थ होता है?

उत्तर : प्राणों का आयाम अर्थात् प्राणों का नियमन। प्राणों (यहाँ प्राणवायु) का आयाम (नियमन क्षेत्र) का अभ्यास करना है।

– अमित (वडसा)

प्रश्न : बच्चों का मन कोमल होता है उसे सत्संग, सेवा, सुमिरण से जोड़ने में समय लगता है, पर बुरी संगति में वे जल्दी जुड़ जाते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर : बुरा होना आसान होने के कारण।

– कमल नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : भैया जी! कोई व्यक्ति अच्छा काम भी करे और स्वयं को प्रचारित भी करे तो उसे क्या कहा जाना चाहिए? क्या यह उचित है?

उत्तर : अच्छाई प्रचारित होनी चाहिए, व्यक्ति नहीं। हाँ यह बात स्वयं हो जाती है कि वह अच्छाई कैसे व किसके द्वारा बढ़ रही है। अपने मुंह से स्वयं की प्रशंसा करने वाला कमजोर होता है।

– अमनप्रीत सिंह (काइनौर)

प्रश्न : अपने माता–पिता और गुरुजनों का सम्मान करने के संस्कार बच्चे किस उम्र में और किससे सीखते हैं?

उत्तर : पैदा होने से ही; वातावरण घर से ही बनता है। बच्चे के होश सम्भालते ही यदि माता–पिता एक–दूसरे का व गुरुजन का सम्मान अपनी बोली भाषा द्वारा व्यक्त करें तो बच्चे में संस्कार पड़ने शुरू हो जाते हैं।

प्रश्न : मन में घृणा क्यों आती है?

उत्तर : 'स्वयं' की कमजोरी के कारण।

– गीतू–ज्योति खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : हम अपनी मन की बुराईयों को कैसे खत्म कर सकते हैं?

उत्तर : स्वयं की जानकारी करके। मन सही दिशा में रहे इसके लिए सत्संग करना सबसे अधिक सशक्त ढंग है।

प्रश्न : हमसे अगर कोई बिना कारण नाराज हो जाए तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : अपने ठीक मार्ग पर चलते रहना चाहिए। बिना कारण की नाराजगी अधिक समय तक नहीं रह पाती।

कहानी : रूपनारायण काबरा

दगे की सजा

एक राजा था विद्वानों का बड़ा आदर करता था। एक कथावाचक ब्राह्मण नित्य उन्हें कथा सुनाने जाता था। राजा को कथा अत्यन्त अच्छी लगती थी। वह प्रतिदिन ब्राह्मण को एक सोने का टका दिया करता था।

देने वाला देता था और लेने वाला लेता था। दोनों की प्रसन्नता थी। पर दुनिया में ऐसे भी लोग होते हैं जो दूसरे की खुशी से जलते हैं। ऐसा ही था ब्राह्मण का पड़ोसी नाई। वह भी जलने लगा ब्राह्मण के भाग्य से। उसने सोचना प्रारम्भ किया कि कैसे इस ब्राह्मण को राजा की निगाह में गिराया जाए। चतुर तो वह था ही। आखिर उसने एक तरकीब सोच ही ली।

उसने ब्राह्मण से कहा, ''पंडित जी! महाराज कहते हैं कि आपके मुँह से बड़ी बदबू आती है। अतः आप जब कथा सुनाने जाया करें तो नाक और मुँह पर पट्टी बाँधकर जाया करें।''

ब्राह्मण भोला था। उसने नाई की बात सच मान ली और वैसा ही करने को तैयार हो गया।

उधर नाई ने राजा से कहा, ''महाराज! यह आपके कथावाचक पंडित जी बड़े दुष्ट और कुटिल हैं। आज कह रहे थे कि राजा के मुँह से बड़ी गंदी सड़ांध तथा बदबू आती है, इसलिए कल से नाक व मुँह पर पट्टी बांध कर कथा सुनाने जाया करूंगा।''

नाई की बात सुनकर राजा गुस्से से आग–बबूला हो उठा और बोला, ''मेरे ही टुकड़ों पर पलने वाले उस ब्राह्मण की यह मजाल! मैं कल ही उसको इसकी सजा दूंगा।''

दूसरे दिन ब्राह्मण राजा के यहाँ कथा सुनाने लगा। उसके नाक व मुँह पर पट्टी थी। राजा को नाई की बात का विश्वास आ गया। उस दिन राजा ने ब्राह्मण को सोने के दो टके दिये और एक पत्र दिया और कहा, ''यह आवश्यक पत्र है, तुरन्त कोतवाल को जाकर दो।''

ब्राह्मण राजा के यहाँ से चला। बाहर नाई तो प्रतीक्षा में ही था और सोच रहा था कि देखें पंडित जी को क्या सजा मिलती है।

ब्राह्मण ने बड़े भोलेपन से नाई से कहा, ''तुम्हारी सलाह ठीक थी। आज तो महाराज ने सोने के दो टके दिये हैं।''

सुनकर नाई मन ही मन जल भुन गया। वह बड़ा चालाक था, बोला, ''पंडित जी! तरकीब मैंने बताई थी अतः एक टका मुझे दो।'' सीधे–सादे बाह्मण ने एक टका नाई को दिया और कहा, ''तुम यह पत्र शीघ्र कोतवाल साहब को दे आओ, महाराज ने भिजवाया है।''

नाई ने प्रसन्न होकर टका जेब में रखा और पत्र लेकर कोतवाल के पास पहुँचा। पत्र में लिखा था, ''इस पत्र को लाने वाले की तुरन्त नाक काट ली जाये।'' कोतवाल ने बिना पूछताछ के तुरन्त महाराज की आज्ञा का पालन किया और नाई की नाक काट ली।

दूसरे दिन ब्राह्मण नित्य की भांति ही राजा को कथा सुनाने पहुँचा। बाह्मण की नाक ज्यों की त्यों देखकर राजा चकित हुआ। उसने ब्राह्मण से पूरी बात पूछी। ब्राह्मण ने पूरी रामकहानी सुना दी। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ यह जानकर कि दगाबाज को अपने किये की सजा अपने–आप मिल गई और निर्दोष और भोला ब्राह्मण बच गया।

आओ इनसे सीखें

घड़ी से	–	समय की कद्र करना
समुद्र से	–	विशाल दिल रखना।
चींटी से	–	निरंतर कर्म करते रहना।
वृक्ष से	–	परोपकारी बनना।
धरती से	–	सहनशील बनना।
गुलाब से	–	दुःख में भी खुश रहना।
सूर्य से	–	सब को प्रकाशित करना।
दीपक से	–	रोशनी फैलाना।
कुत्ते से	–	वफ़ादार बने रहना।
कोयल से	–	हमेशा मीठा बोलना।

– सुमेश कुमार (लखनऊ)

जानकारी (पक्षी जगत) : दीपांशु जैन

पेंगुइन का अनोखा संसार

छोटे–छोटे पंख एक–दूसरे पर इस तरह चढ़े हुए, मानो पंखों की खपरैल बनाकर पीठ पर टिका दी हो। छोटे लेकिन मोटे पैरों पर अपने भारी शरीर को संभाले, चोंच थोड़ी झुकाकर जब बर्फ पर चलता है, तो ऐसा लगता है जैसे कोई बौना रंग–बिरंगा कपड़ा लपेटे चला जा रहा हो।

यह पेंगुइन पक्षी है, दक्षिणी ध्रुव प्रदेश का निवासी। देखने में जितना अजीब, उतनी ही विचित्र आदतें हैं इसकी। रहता है पानी में, अंडे देता है सूखे में। अंडे देने के लिए एकदम एकांत, शांत वातावरण चाहिए, जहाँ किसी दुश्मन के आने की आशंका न हो। ऐसे स्थान की तलाश में इसे मीलों चलना पड़े, तो वह भी गवारा। यहाँ तक कि दक्षिणी ध्रुव का यह पक्षी भूमध्य रेखा के नजदीक दक्षिण अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के किनारे के टापुओं पर भी देखा जाता है। इतनी दूर ये कैसे चले आते हैं, जानते हैं आप?

ध्रुव प्रदेश की ओर से उत्तर की ओर ठंडी जल धाराएं चलती हैं। ये ठंडी जल धाराएं पेंगुइन को वहाँ तक पहुँचने में मदद करती हैं।

आप सोचते होंगें कि जब यह इतनी दूर चला जाता है, तो उड़कर जाता होगा। नहीं, अपने छोटे पंखों के कारण यह कतई नहीं उड़ पाता। हाँ, तैरता बहुत तेज है। जब यह तैरता है, तो ऐसा लगता है, मानो पानी पर उड़ रहा हो। इसके जालदार पैर तैरने में पतवार का काम करते हैं और वाटरप्रूफ पंखों की खपरैल तो मानो इसके लिए वरदान ही है। सूखी धरती और बर्फीले मार्गों पर यह बड़े पेड़ पर भी चढ़ जाता है। जब यह बतख की तरह चलता है, तो इसकी चाल बड़ी लुभावनी लगती है।

इसका भोजन है छोटी–छोटी मछलियां और दूसरे जल–जंतु। भोजन के मामलों में यह पूरा बगुला भगत है। पानी से इसे इतना प्यार है कि अगर अंडे देने और बच्चे सेने का सवाल न हो तो पानी से बाहर न निकले। पेंगुइन पक्षी के लिए यही सबसे अधिक जीवट का काम है।

आप जानते हैं कि दक्षिणी ध्रुव पर छह महीने (सर्दियों में) बर्फ जमी रहती है और उन दिनों सूरज के दर्शन नहीं होते और जब गर्मियों में सूरज निकलता है, तो लगातार छह महीने तक अस्त नहीं होता। और यही मौसम होता है, जब पेंगुइन पक्षियों को अंडे देने के लिए घोंसला बनाना पड़ता है।

लेकिन घोंसला बनाये कहाँ? बर्फ में? और अगर बर्फ पिघल गई तो? इसलिए इसे कोई ऐसा स्थान तलाशना पड़ता है, जहाँ की बर्फ पिघल जाने से पत्थर निकल आयें हों और आस–पास की बर्फ पिघल जाने से अंडे बह जाने का खतरा न हो। स्वाभाविक है कि ऐसी जगह उसे कुछ ऊंचाई पर ही मिलेगी। इस कारण गर्मियां शुरू होते ही ये ऊंचाई की ओर चल पड़ते हैं।

मादा पेंगुइन वर्ष में एक बार सिर्फ दो अंडे देती है और अंडे देने के बाद वह आराम करने के लिए फिर पानी में चली जाती है। तब अंडों और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी अकेले नर को उठानी पड़ती है। मादा को लौटने में करीब चार हफ्ते लग जाते हैं। इस बीच नर कुछ खाता नहीं है। मादा के लौटने पर नर आराम करने चला जाता है।

उनके बच्चों का भोजन भी विचित्र होता है। पेंगुइन पक्षी पानी में जाकर भर पेट मछलियां खाकर घोंसले में लौटता है, जहाँ बच्चे उसका इंतजार कर रहे होते हैं। घोंसले में आकर यह मछलियां बच्चों के सामने उगल देता है, समूची नहीं, करीब–करीब पची हुई, क्योंकि लौटने में इतना समय लग जाता है कि मछलियां पच चुकी होती हैं। मां–बाप के पेट में पचाया हुआ यह भोजन बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। उनके लिए यह पौष्टिक भी होता है।

इतना ही नहीं, पेंगुइन पक्षियों की समाज–व्यवस्था भी बड़ी अच्छी होती है। पेंगुइन के जोड़े एकांत में घोंसला जरूर बनाते हैं, किंतु एक स्थान पर एक ही जोड़ा हो, ऐसी बात कभी नहीं होती। भला पेंगुइन को पेंगुइन से क्या डर! अंडे देने के मौसम में वे बाकायदा बस्ती बनाकर रहते हैं। और जब मां–बाप भोजन की तलाश में दूर चले जाते हैं, तो बड़े बच्चे छोटों की देखभाल करते हैं। सब मिल–जुलकर रहते हैं।

अंडे देने के मौसम के बाद यानी सर्दियों में पेंगुइन फिर पानी में चले जाते हैं।

यह तो हुई साधारण पेंगुइनों की बात। लेकिन राजा–रानी के नक्शे कुछ दूसरे ही होते हैं। इस जाति के पेंगुइन आकार में कुछ बड़े होते हैं और इन्हें अंडे देने से लेकर बच्चों को ताकतवर बनाने तक ज्यादा समय लगता है। इसलिए अगर गर्मियों के शुरू में अंडे दें, जैसा कि साधारण पेंगुइन करते हैं, तो सर्दियां शुरू होने तक बच्चे कमजोर ही रह जायें और मर जायें। इसलिए ये गर्मियां शुरू होने से पहले ही अंडे देते हैं। उन दिनों ध्रुव प्रदेश पर रात होती है इसलिए अंडे देने और सेने का काम अंधेरे में ही शुरू करना होता है। ठंड से बचाने के लिए मादा अपने पैरों या पंखों से अंडों को छिपाये रखती है।

बोधकथा : कमल जैन

चोर की मदद करने वाले सेठजी

एक नगर के सेठ की गिनती सबसे सम्पन्न लोगों में होती थी लेकिन अपार धन–सम्पत्ति होते हुए भी उन्होंने कभी अपने हाथों से दान नहीं दिया था। कई लोगों ने उन्हें इस बारे में कहा था पर उन्होंने कभी गंभीरता से उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

एक रात सेठ के घर एक चोर ने सेंध लगाई। उसने सावधानी से घर का कीमती सामान एकत्र किया और उसकी एक बड़ी पोटली बनाई। पोटली सिर पर रखते ही वह गिर गई और रात के सन्नाटे में धम्म की आवाज होते ही सेठजी की नींद उचट गई। वे चोर के पास गये और पोटली उठाने में उसकी मदद करने लगे। चोर को डर से कांपते हुए देख कर उन्होंने कहा– "डरो मत भाई, तुम सब यह खुशी–खुशी साथ ले जा सकते हो मगर तुम भी मेरे ही जैसे लगते हो। मैंने भी अपने जमा धन से किसी और के लिए कुछ नहीं निकाला। इसलिए मेरा धन भी मुझ पर भार की तरह है। अगर तुम भी मेरी तरह नहीं करते और पोटली में से थोड़ा सामान निकाल लिए होते तो तुम्हारे लिए इसे उठाना आसान हो जाता। खैर, अब तुम यह सामान ले जा सकते हो।"

चोर यह सुनकर दंग रह गया। प्रायश्चित करने के उद्देश्य से उसने कहा– "आप यह सब वापस ले लीजिए और मुझे क्षमा कीजिए।"

यह सुनकर सेठ ने कहा– "तुम्हें एक शर्त पर क्षमा किया जा सकता है। तुम इसमें से कुछ धन ले लो और कोई काम–धंधा शुरू कर दो। इस प्रकार मेरा धन परोपकार के काम में लग जाएगा और तुम्हारा जीवन भी सुधर जाएगा।"

चोर ने वैसा ही किया।

सेठजी उस दिन से हर किसी गरीब की सहायता करने लगे। •

आओ अच्छे गुण अपनायें।
हँसती दुनिया पढ़े-पढ़ायें।।

बाल कविता : डॉ. रतिराम सिंह निरंकारी

बुद्धिमान कहलाता है

मिले फूल से फूल तो,
गुलदस्ता बन जाता है।
ईंट से ईंट जुड़े तो देखो,
सुन्दर घर बन जाता है।।

छोटी–छोटी जल की बूंदें,
सागर बन लहराती हैं।
मिट्टी के कण–कण से ही,
यह पृथ्वी बन जाती है।।

पल–पल छोटा लगता है पर,
इससे युग बन जाता है।
पल–पल का जो मोल समझता,
बुद्धिमान कहलाता है।।

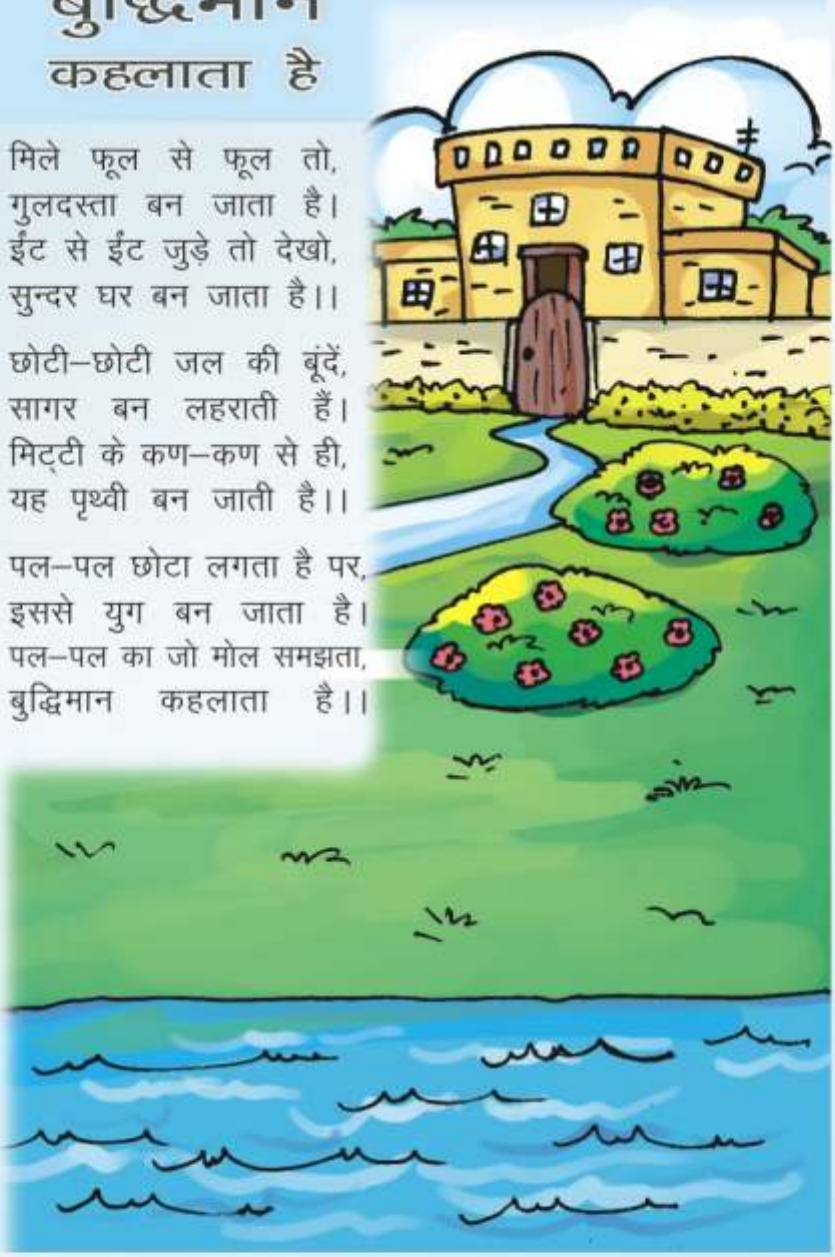

आलेख : राकेश खेड़ा एडवोकेट

फोबिया

फोबिया एक मनोवैज्ञानिक शब्द है, जिसका अर्थ है असंगत व अतार्किक भय। एक भय, जिसका कोई आधार नहीं होता अर्थात् ऐसा डर जिसका अस्तित्व नहीं होता। फोबिया कई प्रकार का होता है– जैसे पहाड़ों से डरना, ऊँचाई से डरना, परीक्षा से डरना, ये सभी ऐसे डर हैं जिनका कोई आधार नहीं होता। वास्तव में ये वे डर हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता। डर वास्तव में कहीं मौजूद नहीं होता।

किसी–किसी विद्यार्थी में परीक्षा से पहले घबराहट शुरू हो जाती है जिसे 'एग्जामों फोबिया' भी कहा जाता है, जिसके कई कारण होते हैं। कई माता–पिता बच्चों पर पढ़ाई का दबाव डालना शुरू कर देते हैं, कोई लक्ष्य थोप देते हैं जिसमें बच्चे का कोई ध्यान नहीं होता। जब इस तरह के मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ने लगते हैं तो उसके अन्दर भय पैदा होना शुरू हो जाता है।

कई बार माता–पिता बच्चों पर अनावश्यक रूप से बोझ डालते हैं और उन पर अपना लक्ष्य थोप देते हैं कि जैसे डॉक्टर, इंजीनियर या कुछ और बनने का लक्ष्य थोप देना है। परन्तु कई बार बच्चा मेहनत करके भी लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता तो उसके अन्दर हीन भावना आ जाती है, उसमें डिप्रैशन (अवसाद) आ जाता है। ऐसी परिस्थिति में माता–पिता बच्चे को उत्साहित करें और उसके ऊपर कोई लक्ष्य थोपकर दबाव न डालें। वे यह उम्मीद करें कि बच्चा जो भी मेहनत कर रहा है, उसका उसे उचित परिणाम प्राप्त होगा। माता–पिता का भी यह कर्तव्य है कि वे घर के वातावरण को मधुर रखें क्योंकि पारिवारिक कलह से बच्चों की पढ़ाई पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

विद्यार्थी परीक्षा में मनवांछित फल पाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखें –

1. पढ़ाई का प्रबन्ध समयसारणी के अनुसार करें।
2. कमजोर विषय पर अधिक ध्यान दें तथा कठिन विषयों पर उस समय पढ़ाई करे जब आप ताजगी का अनुभव करे।
3. रात्रि के समय पर्याप्त मात्रा में निद्रा लें।
4. प्रातःकाल का समय पढ़ाई में जरूर लगाये।
5. लक्ष्य की चर्चा अधिक करने की बजाय लक्ष्य पर पहुँचने के लिए प्रयास करें।

6. परीक्षा केन्द्र में पहुँचने पर किसी से अधिक बातें न करें दिमाग को शांत व ठण्डा रखें, जिससे आपकी उर्जा संचित रहे।
7. परीक्षा के दिनों में शाकाहारी व हल्का भोजन खाएं।
8. परीक्षा के लिए चिंतन करें न कि चिन्ता करे। परिणाम की बजाय कर्म पर केन्द्रित रहें।
9. परीक्षा के दिनों में एकाग्रता से 'रीविजन' करें।
10. परीक्षा समाप्त होने के बाद उस पर अधिक चर्चा न करें अगामी परीक्षा की तैयारी करें।
11. सकारात्मक सोच रखें समस्याओं को माता–पिता के साथ सांझा करने की आदत डालें।
12. परीक्षा केन्द्र में प्रश्न–पत्र मिलते ही सर्वप्रथम प्रभु–परमात्मा का ध्यान करते हुए प्रश्न–पत्र को ध्यान से पढ़े। सभी शर्तों को पढ़कर सुनिश्चित कर लें कि कितने प्रश्न अनिवार्य हैं। समय की प्रबन्ध व्यवस्था ठीक ढंग से तय करें। सभी अपेक्षित प्रश्नों का उत्तर दें। परीक्षा समाप्ति के निर्धारित समय से पांच मिनट पूर्व उत्तर पुस्तिका को अच्छी तरह जांच लें व सुनिश्चित कर लें कि आपका रोल नम्बर व सभी प्रश्नों की संख्या उत्तर पुस्तिका में ठीक ढंग से लिखित है, अगर नहीं तो उसको ठीक कर लें।
13. परीक्षा केन्द्र में जाने से पूर्व घर में सभी बड़ों व माता–पिता का आशीर्वाद लें जिससे आत्मविश्वास को मजबूती मिलती है।

एग्जामों फोबिया (परीक्षा का काल्पनिक डर) होने पर बच्चे को समझना चाहिए कि परीक्षा एक युद्ध नहीं है कि जिसे जीतना ही है। फेल या पास होना जीवन का लक्ष्य नहीं है। प्रयास पूरी तन्मयता एवं ईमानदारी से करना चाहिए, आत्मविश्वास सबसे उत्तम औषधि है, केवल आत्म बल को बनाए रखें।

एक वनडे या वर्ल्ड कप हारने से टीम मैच खेलना बन्द नहीं करती बल्कि जीतने के लिए और मेहनत से प्रयास करती है। इसी तरह हार–जीत और सफलता व असफलता से न जुड़कर कर्म से जुड़ें तब कभी भी भय नहीं सतायेंगा। 'एग्जामो फोबिया' रूपी नकारात्मक सोच को कभी भी दिमाग में प्रवेश मत करने दो।

• • •

पढ़ो और हँसो

वेटर : सर, आप क्या लेंगे? चाय या कॉफी?
राजेश : मेरे लिए चाय ले आओ।
विजय : मेरे लिए भी चाय ले आओ लेकिन जरा साफ कप में ही लाना।
वेटर : (कुक से) दो चाय बना दो, एक चाय साफ कप में देना।

कंजूस मालिक : अरे रामू मुझे लुटवाएगा क्या? एक रोटी पर इतना घी।
रामू : मालिक, शायद गलती से मेरी रोटी आपकी थाली में पहुँच गई है।

विनी : (दुकानदार से) 20 रुपए का रिचार्ज दो और यह बताओ कि 20 रुपए में कितने का टॉक टाईम मिलता है।
दुकानदार : 15 रुपए का।
विनी : बाकी 5 रुपए का भुजिया डाल दो।

ग्राहक : तुम्हारे इस मटर–पनीर में पनीर कहीं नज़र नहीं आता।
होटल का बैरा : अरे, तुमने गुलाब जामुन में कभी गुलाब को देखा है।

पत्नी ने पति से कहा–मैं आज एक डॉक्टर के पास गई थी। उसने मुझे बताया कि पहाड़ पर एक महीना बिताना, मुझे फायदा पहुँचायेगा। तुम्हारी राय में मुझे कहाँ जाना चाहिए।
दूसरे डॉक्टर के पास – पति ने कहा।

अनिल : सुनील तुम्हें यह सोचकर आश्चर्य नहीं होता कि अंडे से बच्चे कैसे निकलते हैं?
सुनील : होता है, पर उससे ज्यादा यह सोचकर होता है कि वे उसके अंदर घुसते कैसे हैं?

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

एक दोस्त : (दूसरे से) बचपन में मै एक बार ट्रक के नीचे आ गया था।
दूसरा दोस्त : और बच गए?
पहला : ठीक से याद नहीं, बहुत पुरानी बात है।

टीचर : मुँह में पानी, मुहावरे को वाक्य में प्रयोग करें।
छात्र : मैंने नल पर मुंह लगाया और मेरे मुंह में पानी आ गया।

सोनू : (मोनू से) मुझे तो आंख बंद करने पर भी दिखाई देता है।
मोनू : (हैरानी से) क्या दिखाई देता है?
सोनू : अंधेरा।

राजू : मेरे पापा से कोई आंख मिलाने की हिम्मत नहीं कर सकता।
मोना : तुम्हारे पापा क्या हैं?
राजू : हैं तो कुछ नहीं, दरअसल, उनकी आंख आ रही है।

सोनू : (मोनू से) बताओ, भालू के शरीर पर इतने बाल क्यों होते हैं?
मोनू : क्योंकि जंगल में नाई नहीं होता।

– राधा नाचीज (नजफगढ)

मिठाई की दुकान पर लिखा था– यहाँ बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई मिलती है।
रवि ने उसके आगे लिख दिया – इस बात की गवाह यहाँ पर भिनभिना रही यह हजारों–लाखों मक्खियाँ हैं।

एक बार एक हाथी जंगल से गुजर रहा था तो सब चूहे अपने–अपने बिलों में घुस गये परन्तु एक चूहा अपने पैर बाहर निकाले हुए था।
दूसरे चूहे ने उससे पूछा – तुमने अपना पैर बाहर क्यों निकाल रखा है।
पहला चूहा बोला – जब हाथी मेरे पास आयेगा तो मैं हाथी को अपने पैर से अड़ंगी मारकर गिरा दूँगा।

एक बार एक व्यक्ति को चुनाव में खड़ा किया गया। वह एक चुनाव सभा में भाषण देने पहुँचा तो वह बोला – भाइयों! मैं खड़ा हूँ।
तब एक व्यक्ति ने कहा –आप खड़े क्यों हैं बैठिये।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

दिसम्बर अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम	:	आयुषि 7/5, निरंकारी कालोनी दिल्ली – 110009	आयु 12 वर्ष
द्वितीय	:	दिव्या कोहली रेलवे स्टेशन के पास मारण्डा, जिला– कांगड़ा (हि.प्र.)	आयु 13 वर्ष
तृतीय	:	हर्षिता रस्तौगी 28, चर्च स्ट्रीट मेरठ छावनी (उ.प्र.)	आयु 13 वर्ष

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

दीप्ति राजा (धनास, चण्डीगढ़), सुमिरन डोडानी, वंशम खुबचंदानी (भोईपारा, रायपुर), तुषार कुमार (मो. गोहर अली खां, अफजलगढ़), इशाना खट्टर (कमाण्डर कालोनी, आगरा), अनुराग कुमार (चंदौसी), सिमरन कोहली (मारण्डा), रेखा गेधर (खारा), मान्या कालड़ा (राजपुरा टाऊन), मृदुल (गोहाना), संजीव तिवारी (निरंकारी कालोनी, दिल्ली), इंदू निरंकारी (झडियार), अक्षय कुमार (चण्डीगढ़), गुंजल मनोचा (भगत नगर, पानीपत), अक्षय कुमार (चम्बोह), प्राची संतलानी (अजय नगर, अजमेर), वैष्णवी छाबड़ा (हुडा, जगाधरी), विदिता वधवा (अवंतिका, रोहिणी, दिल्ली)।

फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 फरवरी तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतियोगियों के नाम प्रकाशित किये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के **अप्रैल** अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेटबैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

दो बाल कविताएं : डॉ. रामनिवास 'मानव'

जीवन का आधार प्रकृति

है अमूल्य उपहार प्रकृति,
जीवन का आधार प्रकृति।
प्रकृति से सब, सबमें प्रकृति,
सकल जगत् का सार प्रकृति।
कहीं पुष्प कहीं इन्द्रधनुष,
रंगों का संसार प्रकृति।
स्वर कोयल का, बुलबुल का,
भंवरे की गुंजार प्रकृति।
कलकल–छलछल सरिता की,
झरने की झंकार प्रकृति।
नील गगन, सुन्दर धरती,
है दोनों का प्यार प्रकृति।
रूप कई हैं धरती के,
कण–कण का श्रृंगार प्रकृति।

सनातन नाता

धरती माँ, आकाश पिता है,
और पेड़ हैं भ्राता।
यही हमारा है इन सबसे
सुखद सनातन नाता।
नदियां, निर्झर, पर्वत, सागर,
सारे अपने सहचर।
पुष्प, लता, पक्षी, भंवरों से,
जीवन लगता सुन्दर।
इन सबको जानें–पहचानें,
रिश्ते सभी निभायें।
तालमेल से जीवन संवरे,
सुख देकर सुख पाये।

मक्खी और पहलवान

कहानी : नीरज कश्यप

गाँव रामपुर में राजबीर पहलवान का बड़ा नाम था। राजबीर जैसा पहलवान रामपुर में तो क्या आस–पास के गाँवों में भी नहीं था। कुश्ती में उसने कई ईनाम भी जीते थे इसलिए पहलवानों में उसे मिसाल के तौर पर याद किया जाता था। किन्तु राजबीर जितना बड़ा पहलवान था उतना ही बड़ा घमण्डी भी था। उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमण्ड था। वह हमेशा रौब में रहता था। दुकानों पर से यदि कुछ खरीदता तो पैसे दिये बिना ही चला जाता और बेचारे दुकानदार डर के मारे कुछ नहीं बोलते क्योंकि एक तो पहलवान, दूसरा उसके नाम का बोलबाला चारों तरफ था।

राजबीर ताकतवर जरूर था लेकिन उसने अपनी ताकत का इस्तेमाल कुश्ती के अलावा कभी किसी की मदद करने में नहीं किया। उसने कभी किसी जरूरतमंद की सहायता नहीं की। परन्तु 'अक्ल और भैंस' में जीत हमेशा अक्ल की ही होती है। एक छोटी–सी चींटी विशालकाय हाथी को भी पस्त कर सकती है।

समय बीतता गया। एक दिन राजबीर एक हलवाई की दुकान पर गया और उससे जलेबियां देने को कहा। हलवाई ने जलेबियां दे दी और राजबीर हमेशा की तरह पैसे दिये बिना ही चला गया।

जहाँ उस हलवाई की दुकान थी वहाँ बहुत गंदगी थी कूड़े के ढेर लगे थे तथा नालियां जाम थीं जिस कारण नालियों में खतरनाक मक्खियां व मच्छर पैदा हो गये थे। उस गंदगी में से मक्खी व मच्छर इधर–उधर उड़ रहे थे तथा हलवाई की बिना ढकी मिठाइयों और जलेबियों पर जाकर बैठ रहे थे जिसके कारण मिठाईयों में अनेक प्रकार की बीमारियां आ गई थीं।

घर पर पहुँचकर शाम के समय राजबीर ने दूध के साथ जलेबियों का सेवन किया और जाकर बिस्तर पर सो गया। अगली सुबह राजबीर अपने नियमित समय पर नहीं उठ सका। कुछ देर बाद जब वह उठा तो उसे अपने सिर में दर्द महसूस हुआ। राजबीर की माँ ने उसे नाश्ता लाकर दिया किन्तु न तो उसका मन नाश्ते में था और न ही व्यायाम में जो कि वह नाश्ते से पहले करता था।

अचानक ही राजबीर को उल्टियां शुरू हो गयी। राजबीर की पीड़ा और बढ़ गयी सिर में तो पहले ही दर्द था अब उल्टियों ने उसके शरीर को और कमजोर बना दिया। दोपहर होते–होते राजबीर को अतिसार (दस्त) भी शुरू हो गये और वह कई बार उल्टियां भी कर चुका था। उसकी माँ चंदरों ने कई घरेलू उपचार भी किये परन्तु कोई लाभ न हुआ। शाम तक हालत यह हो गई कि वह अब खड़ा भी न रह पा रहा था। राजबीर का शरीर अत्यधिक कमजोर हो चुका था, अब उसमें इतनी भी ताकत नहीं थी कि वह एक तिनका भी तोड़ सके।

कुछ समय बाद ही लोगों की भीड़ जमा हो चुकी थी। राजबीर ने आंखें खोलकर देखा कि आज वे लोग भी उसके लिए चिंतित थे जिनको उसने हमेशा सताया व दुख दिया। उसे मन ही मन बड़ी ग्लानि हुई।

अब लोगों की भीड़ बढ़ चुकी थी। कोई कुछ कहता, कोई कुछ बताता। आखिर एक बुजुर्ग ने कहा कि हमें समय बर्बाद नहीं करना चाहिए और तुरन्त राजबीर को शहर के किसी डॉक्टर के पास ले चलना चाहिए। सभी सहमत हो गये।

अगली सुबह जब राजबीर ने आंखें खोली तो अपने को एक कमरे में पाया। वह इस समय शहर के एक अस्पताल में था। राजबीर के घरवालों के साथ डॉक्टर ने कमरे में प्रवेश किया।

डॉक्टर ने पूछा– अब कैसा महसूस कर रहे हो राजबीर?

राजबीर ने बताया– मैं अब पहले से अधिक अच्छा महसूस कर रहा हूँ। लेकिन डॉक्टर साहब मुझे हुआ क्या था?

डॉक्टर ने बताया– हमने लोगों से जब तुम्हारे खान–पान के बारे में पूछा तो हमें पता चला कि तुमने जो जलेबियां हलवाई के यहाँ से खाई थी वहाँ बड़ी मात्रा में गंदगी थी और हलवाई ने सभी मिठाईयां बिना ढककर ही रखी हुई थीं इसलिए वहाँ के सभी मक्खी और मच्छर मिठाईयों पर जाकर बैठ रहे थे जिस कारण वहाँ रखी सभी मिठाईयों के साथ–साथ जलेबियां भी प्रदूषित हो गईं और उनमें गंदे कीटाणु आ गये।

इस प्रकार के किसी भी खान–पान से हैजा तथा मलेरिया जैसी जानलेवा बीमारी होना स्वाभाविक है। ऐसी बीमारी किसी भी हृष्ट–पुष्ट मनुष्य को कुछ समय में ही जानलेवा स्थिति में ला सकती है।

राजबीर को सारी बातें समझ में आ गयी थी तथा साथ ही यह भी समझ में आ गया कि यदि गाँव के लोग सही समय पर उसे अस्पताल न लाते तो उसकी जान वास्तव में खतरे में थी। अब वह यह भी जान गया था कि ताकत का सही उपयोग क्या है? उसने सभी ग्रामीणों को धन्यवाद दिया तथा अपने किये पर क्षमा माँगी।

ग्रामीणों ने उसे क्षमा कर दिया तथा साथ यह प्रण भी लिया कि सफाई का विशेष ध्यान रखेंगे और खाने–पीने की चीजों को ढककर रखना है तथा पानी को स्वच्छता से प्रयोग करना है।

बच्चों! कहानी की सत्यता जो रही हो परन्तु हमें इस कहानी से एक नहीं दो शिक्षा मिलती हैं एक तो यह कि हमें सफाई व स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए और दूसरी यह कि अपनी ताकत का कभी भी गलत इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

गुण भरती है हँसती दुनिया।
अवगुण हरती हँसती दुनिया।

फोटो फीचर

सुनो, मैं हार्दिक हूँ,
तुमने मुझे पहचाना नहीं?

हाँ, थोड़ा–थोड़ा याद आ रहा है,
तुम हार्दिक हो। –अन्वेशा (जालना)

तुम लोगों की
बातें सुनकर मैं
हैरान हूँ, फिर तो
तुम्हें शायद यह
भी याद नहीं
होगा कि मैं
नन्दिता हूँ।
←

हाँ–हाँ मैं भी यही सोच रहा हूँ, क्या हो
गया है आजकल लोगों को कुछ याद ही
नहीं रहता। –सार्थक (जालना)

नहीं नहीं, ऐसी बात नहीं है, मुझे देखो,
मुझे पूरी तरह याद है कि तुम कौन हो?
–महक (फैजाबाद)

याददाशत बढ़ाने और दिमाग
को तरोताजा रखने के लिए
तो मैं यहाँ कुदरत की गोद
में बैठा हूँ।
–वीहान (बीकानेर)

फोटो फीचर

आप सभी को मेरा नमस्कार, मेरी मम्मी ने मुझे हाथ जोड़कर नमस्कार करना सिखाया है। –नव्या (राजपुरा)

मुझे टीचर जी रोज अच्छी–अच्छी बातें सिखाती हैं। मैं उन्हें यह गुलदस्ता भेंट करूंगा। –विवेक (गोरेगांव, मुम्बई)

मेरी मम्मी ने मुझे आज ही बाजार से यह लाल ड्रेस दिलवाई है।

मेरी सैंडल तो देखो कितनी अच्छी लगती है। –सिद्धान्त (गंगानगर)

मेरी नीली टोपी देखो, यह शर्ट से कितना मैच कर रही है, है न? –हितेन (जालना)

मैं तो स्कूल की 'फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता' में यह लम्बी फ्रॉक वाली ड्रेस पहन कर जाऊँगी। –परी (अमरावती)

फोटो फीचर

अरे, तुम लोग बस बातें ही करते रहोगे या मेरी लाल–नीली नई ड्रेस को भी देखोगे।
–राज (सांगली)

मैं तो यहाँ कुर्सी पर आराम से बैठकर अपनी फुटबॉल टीम का इंतजार कर रहा हूँ। –अर्जुन (पर्जेंटों)

मैं तिरंगा लेकर परेड में सबसे आगे चलूंगा, जयहिन्द।
–कुणाल (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

हम सभी मिलकर आगे बढ़ेंगे और जब सब बढ़ेंगे तभी हमारा देश आगे बढ़ेगा।
–माही (जालना)

हाँ–हाँ हमें मिलकर आगे बढ़ना होगा। सभी को भाई–भाई की तरह रहना होगा। –संदीप, सचिन (हिंगनघाट)

मैं भी आप लोगों से पूरी तरह सहमत हूँ। जहाँ प्यार और मिलवर्तन है वहीं तरक्की है।
–प्रथम (चण्डीगढ़)

इनारा

इनारा देख रहे हो वहाँ,
जाकर जल्द नहा लो।

जाड़े की खिली धूप में
मजा नहाने का लो।।

पानी भी गरम होगा वहाँ,
सच कहता हूँ लालू।

मैं अभी वहीं से आया हूँ,
धोकर सब्जी आलू।।

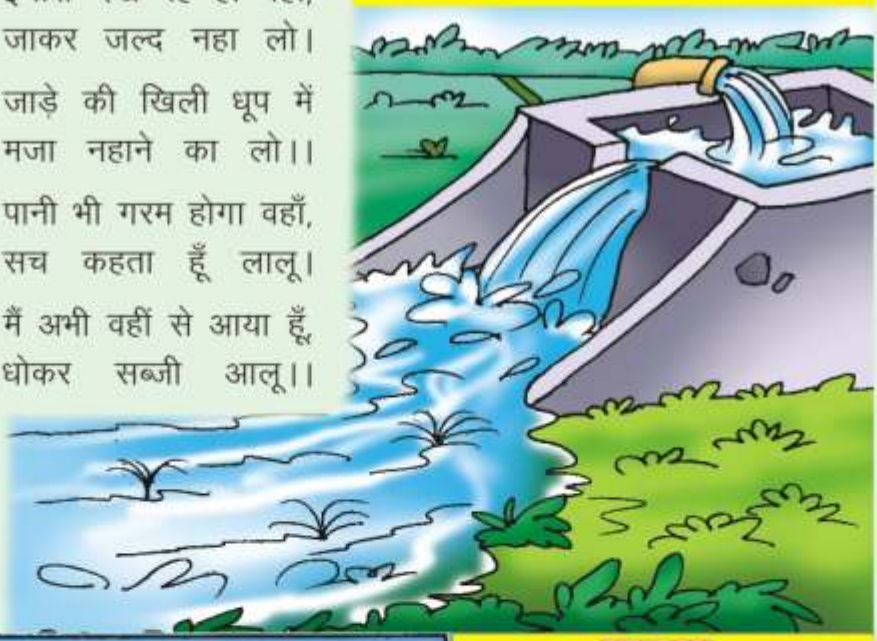

ऊन

ऊनी कपड़े शुरू हो गए,
बिकने हाट बजार।

जाड़े का मौसम आया है,
कुछ तो खरीदें यार।।

चलो बाजार देखें कपड़ें,
कुछ पसन्द आ जाए।

कीमत भी देखनी पड़ेगी,
बात समझ में आए।।

ऊदबिलाव का नाम लेते ही एक ऐसे प्राणी की तस्वीर सामने आती है, जो पानी और जमीन दोनों पर रहता है और जिसका रंग रूप बिल्ली से मिलता–जुलता है। सही अर्थों में ऊदबिलाव पानी की बिल्ली ही है। इस पानी की बिल्ली के करतब भी बड़े निराले हैं। खेलने पर आ जाए तो देखने वाले दांतों तले उंगली दबा लें। नई–नई चालें और कलाबाजियों के जुदा–जुदा तरीके जिस खूबी से वह सीख लेता है। उसकी वजह से उसकी बुद्धिमत्ता का लोहा मानना पड़ता है। इधर उसने कोई नई चीज देखी नहीं कि वह उसकी हूबहू नकल करने की योग्यता रखता है।

इस ऊदबिलाव को पालने की कोशिश तो कइयों ने की और बार–बार की, पर जिस शख्स ने सबसे पहले इस जीव को पालने में सफलता पाई, वह एमिल लायर्स था। इस संबध में उसके अनुभवों का अकूत खजाना जमा हो चुका है। उसने एक घटना का जिक्र किया है कि "एक बार बारह वर्षीय मादा ऊदबिलाव अपने तीन बच्चों के साथ पड़ोस के घर में जा घुसी और सीढ़ियां चढ़कर सीधे स्नानागार में चली गई। वहाँ वह आराम से नहाती रही और फिर उतनी ही इत्मीनान के साथ रेंगते हुए पड़ौसी के बिस्तर पर जा लेटी।"

ऊद की तबीयत बेहद रंगीन होती है। मजाक वह ऐसे कर सकता है, जिस प्रकार मानव मजाक करने की क्षमता रखता है। यह खोज नई है और इसके खोजकर्ता हैं, प्रसिद्ध लेखक गैबिन मैक्सवेल। इससे पूर्व वह ऊद के बारे में दो दिलचस्प किताबें लिख चुके हैं, जो कि अपने विषय और विलक्षण अनुभव सामग्री के कारण दुनिया भर में चर्चित हुई

हैं। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि ऊद ठीक आदमी की तरह हँसता है। उसके हँसने की प्रक्रिया भी खासी दिलचस्प है, हँसते वक्त वह पीठ के बल लम्बा लेट जाता है और फिर मुंह खोलकर जोरों से हिला करता है।

इसकी मूंछों की तुलना बिल्ली के पैरों से की जा सकती है और इसकी पानीदार छोटी–छोटी आंखें गहरा काला रंग लिये होती हैं। सामान्य हालत में देखा जाए तो इसका शरीर थोड़ा–सा गोल आकार लिए होता है। अगर और खुलासा किए जाए तो इसका शरीर धनुषाकार लगता है। इस जीव के पैर अंदर की तरफ घुमे होते है। जालीदार पंजे, पुख्ता टांगें और चौड़ी पूंछ इसकी वे विशेषताएं हैं, जो प्रकृतिप्रदत्त हैं। इन्हीं की बदौलत यह पानी में तरह–तरह के खेल दिखाता है। पर एक बात याद रहे। ऊद जितना मिलनसार और दिलचस्प किस्म का जीव है, आक्रमक होने पर वह उतना ही खतरनाक भी हो सकता है। अगर वह हमला करने का इरादा बना ले तो उससे न तो किसी रक्षा साधन से और न ही दस्ताने वगैरह से बचा जा सकता है।

आवाज के मामले में भी ऊद बेमिसाल जीव है। कभी वह चहकता है, जैसे चिड़िया चहक रही हो। कभी चूं–चूं की ध्वनि करता है, ठीक चूहे की तरह। कभी ऐसा लगता है कि वह जैसे दबी हुई हँसी हँस रहा हो। इसके विपरीत कभी वह इतनी जोर से चीखता है कि उसकी आवाज कम से कम दो किलोमीटर दूर से सुनाई दे जाती है। इसकी चीख इतनी मार्मिक और पुअसर होती है कि उसे सुनकर अच्छे–अच्छों के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। जब वह बिलखती है तो उसका गुस्सा और प्रतिशोध की भावना की अदम्य शक्ति का आभास होता है।

कौतुहल की भावना इसमें कूट–कूट कर भरी है। नई–नई चीजों के बारे में जानने की इसकी ललक कमोबेश किशोर वय के बालकों–सी होती हैं। अगर खुदा न खास्ता इसे कोई खिलौना मिल जाए तो इसके करतब देखने में अपना ही आनंद आता है और कांच की गोलियां खेलने का शौक? इस मामले में तो वह इंसान के खिलंदड़े बच्चों से भी बाजी मार ले जाता है। सागर तट पर आप इसे सीपियां इकट्ठी करते हुए

अक्सर देख सकते हैं। यह भी इसके प्रमुख शौक में शुमार है। इस तरह यह भी साबित हो जाता है कि ऊदबिलाव की बहुत–सी बातें आदमी की आदतों से मिलती–जुलती हैं।

इसके प्रिय खाद्य पदार्थों में है – झींगुर। इसके साथ ही वह मेंढक, मछली, घोंघा और सांप खाने में दिलचस्पी रखता है। खासतौर पर वह कीचड़ में पलने वाली मछलियों का मुरीद होता है। याद्दशत भी इसकी गजब की होती है। एक बार तो कमाल ही हो गया। जब एक ऊदबिलाव ने अपने तीन बरस पहले बिछुड़े मालिक को देखते ही पहचान लिया।

पालतू ऊदबिलाव रजाई ओढ़कर आदमी की तरह तकिया सिर के नीचे लगा कर सोने में विश्वास रखता है। ऊद में साहस की कमी नहीं। अपने हर दुश्मन को बात ही बात में हरा देने की उसमें अकूत क्षमता होती है। यहाँ तक कि जंगली बिल्ली (वन बिलाव) को मारने में वह ज्यादा देर नहीं लगाता। अपने फुर्तीले बदन की वजह से वह सांप के लिए साक्षात् काल से समान होता है। पहले वह सांप को उकसाता है, ताकि वह उस पर हमला करे और जैसे ही सांप हमला करता है, वह उसके फन को पकड़ कर बुरी तरह झंझोड़ता है। उसकी यह झिझोड़ने की प्रक्रिया तब तक चलती रहती है, जब तक सांप मर कर पस्त नहीं पड़ जाता।

मादा ऊदबिलाव साढ़े नौ माह की उम्र से ही बच्चे देना शुरू कर देती है। एक बार में उसके चार तक बच्चे होते हैं। काले रेशमी छोनों को देखकर दिल करता है कि यह इसी तरह बच्चे बने रहें। पूरे छह महीने तक मादा ऊद इनकी परवरिश करती है। तीसरे माह के मध्य में इन बच्चों का तैराकी प्रशिक्षण शुरू होता है। जैसा कि सभी बच्चों के साथ होता है, बाल ऊद पानी के पास आते ही भय से कांपने लगता है। इस

कारण उन्हें जबरन पानी में ठेलना पड़ता है। कभी–कभी मादा ऊद बच्चों को मछली का लालच देकर उन्हें पानी में कूदने को प्रेरित करती है। अक्सर मादा अपनी पीठ पर बच्चों को सवार कर बार–बार निर्ममता से पानी में डुबकी मारती है। बच्चे के सामने दो ही विकल्प रह जाते हैं, या तो वह तैरने को तैयार हो जाए, नहीं तो उसका डूबना तो निश्चित है ही।

लेकिन यह शुरू–शुरू की बात है। जब एक बार ऊद के बच्चों के मन में पानी के प्रति लगाव पैदा हो जाए तो वह दिन–ब–दिन बढ़ता ही जाता है। वह फिर पानी में अपने मौलिक खेल ईजाद करना शुरू कर देता है। जब वह मूड में होता है तो उसकी पानी में तैरने की नजाकत का कोई जवाब नहीं रहता। अगर दो ऊदबिलाव पानी में खेल रहे हों, तो ऐसा लगता है जैसे दो नहीं बीस ऊदबिलाव खेल रहे हों। दरअसल उनके खेलने की गति इतनी तेज होती है कि इस तरह का भ्रम पैदा होने स्वाभाविक ही होता है। भारत में ऊदबिलाव की तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। चिकनी खाल वाले ऊद नदियों, झीलों और प्राकृतिक स्रोतों में पाए जाते हैं। सामान्य ऊद की खाल खुरदरी होती है और वह झरने व झीलों की अपेक्षाकृत ठण्डे स्थानों में रहना पसंद करता है। भारत का सबसे छोटा ऊद एम्बलोनिक्स है। इसका वजन छह से तेरह पौंड तक होता है।

ऊदबिलाव आदमी का सबसे प्रिय खिलाड़ी मित्र माना जाता है, पर यह दुःख की बात है कि इसके कीमती पैरों के लिए आदमी ही इसे खत्म करने पर तुला हुआ है। इसीलिए लियर ने एक जगह लिखा है कि ऊदबिलाव को आज एक ऐसे मित्र की जरूरत है, जो कि उसके अस्तित्व की लड़ाई में उसके साथ कंधे से कंधा मिलकर चल सके।

प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

मनोरंजक चित्र पहेलियां

मनोरंजक चित्र पहेलियां : सही उत्तर

1. कुल 17 बच्चों की मां है।

2. सिर हिरण का, धड़ मगरमच्छ का, पैर बंदर का और पूंछ मछली की है।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। इसमें कहानियां एवं कविताएं रोचक होती हैं तथा प्रेरक प्रसंग प्रेरणादायी होते हैं। आप जो सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित जानकारी देते हैं वह आज के समय में बच्चों के लिए जरूरी है। कृपया इसे हर महीने दिया करें।

–राजेश कुमार (हाजीपुर)

मैं आपकी हँसती दुनिया पत्रिका की से पाठक हूँ। मुझे यह पत्रिका बहुत नियमित ज्ञानमयी व संग्रहपूर्ण लगी। मैं आशा करती हूँ कि आगे भी हँसती दुनिया इसी तरह सफलता प्राप्त करेगी।

हँसती दुनिया का दिसम्बर का अंक नियत समय पर प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ अत्यंत ही लुभावना लगा।

–श्याम बिलदानी (बड़नेरा)

हम बहुत साल से हँसती दुनिया पढ़ते आ रहे हैं। अब तो महीने की आखिरी तारीख में पोस्टमैन पर हर बच्चे की नजर रहती है। जिस बच्चे को हँसती दुनिया हाथ में लग जाय दूसरे से छुपाता हुआ वह पूरी पत्रिका पढ़कर बाद में दूसरों को देता है। सब बच्चे आपस में लड़ते हैं पहले मैं पढ़ूँ पहले मैं पढ़ूँ। मम्मी पढ़कर बहुत अच्छा समझाती है।

– पूनम, (भूसावल)

कुछ ऐसी है पत्रिका 'हँसती दुनिया' कि समझ में नहीं आ रहा है, किन शब्दों में अदा करूँ मैं इसका शुक्रिया। स्वस्थ मनोरंजन के साथ–साथ विस्तृत ज्ञानवर्द्धन एवं समुचित मार्गदर्शन तथा व्यक्तित्व परिष्करण, ये सब भी कम होंगे यदि किया जाए, इस पत्रिका का सही–सही मूल्यांकन। बुद्धिमान हैं वो जो करते हैं इसके हरेक अंक का संग्रहण, अतिश्योक्ति नहीं होगी कहने में कि सर्वप्रारेण सहायक है यह पत्रिका करने में जीवन का समग्र उन्नयन। जो नहीं बने हैं अभी तक इसके पाठक वो बहुत पछताएंगे और जो बन चुके हैं पाठक इसके वो अपने प्रावीण्य का झंडा आज नहीं तो कल जरूर से जरूर फहराएंगे।

–रवीन्द्र प्रसाद सिन्हा, (कटकोना)

वर्ग पहेली के उत्तर

	1 बं	द		2 मि	
	ग		3 स	त्र	4 ह
5 शो	ला	पु	र		री
	दे		6 स्व	दे	श
7 ना	श	8 पा	ती		च
मि		उं		9 च	न्द्र
10 क	न्न	ड		ना	

TU HI NIRANKAR

SUPER Aqua®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएँ।

SUPER AQUA®

R.O. System

Manufacturer :

Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact
Customer Care : 09910103767
09650573131

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

Delhi Off. G-3/115, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-85
Nr. Mother Dairy
Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashrta, (M) 09930804105

Email : superaqua1@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

TUHI
NIRANKAR

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)